IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

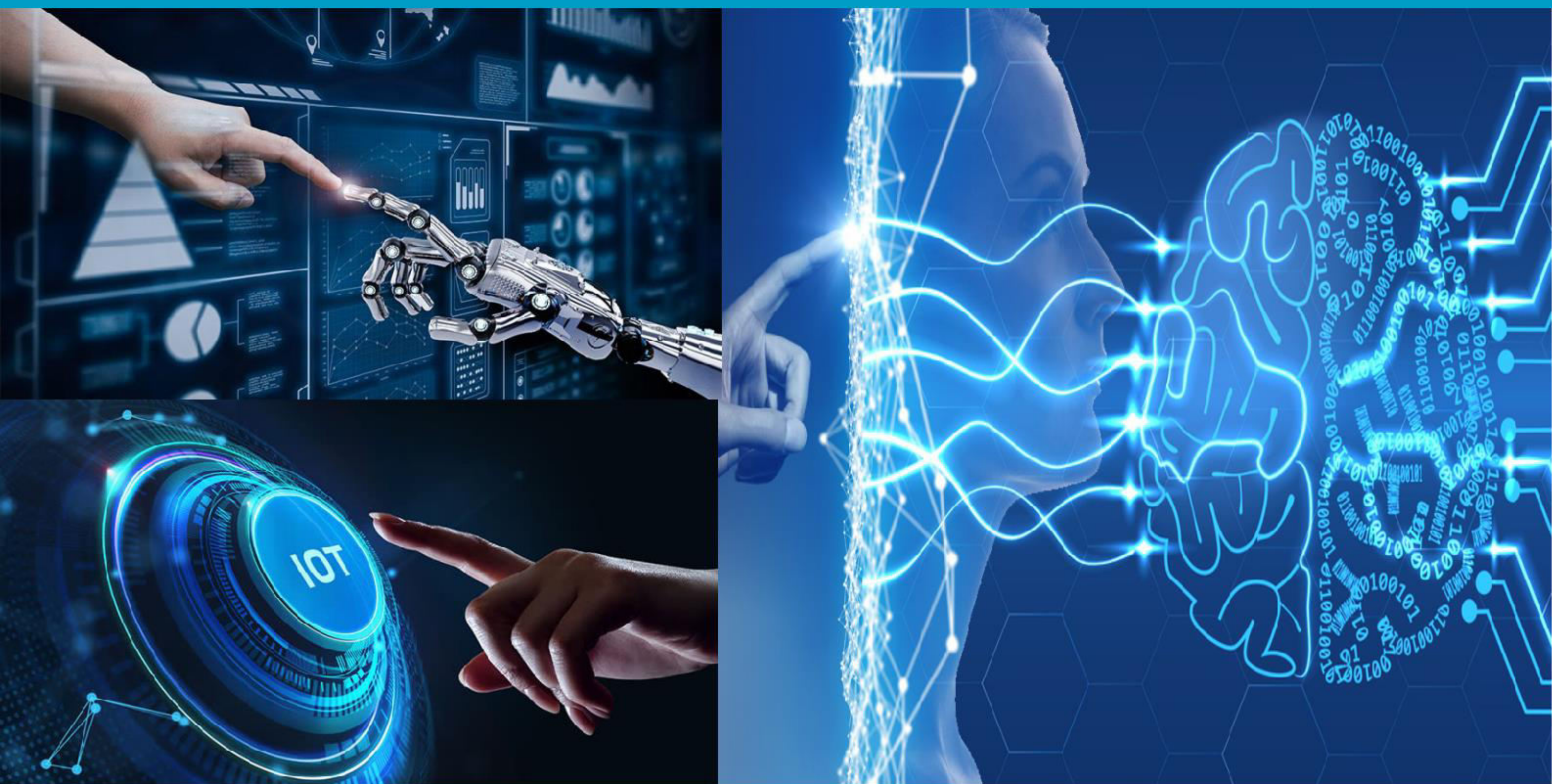

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 9, Issue 11, November 2022

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 7.580

+91 99405 72462 +9163819 07438 ijmrsetm@gmail.com www.ijmrsetm.com

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

सामाजिक लोकतंत्र की स्थापना में डॉक्टर अम्बेडकर का योगदान

Prof. (Dr.) Shashi Bala

Professor, Department of Sociology, Shri Lal Bahadur Shastri Degree College, Gonda (Uttar Pradesh), India

सार

[1] भीमराव रामजी आंबेडकर[a] (14 अप्रैल, 1891 – 6 दिसंबर, 1956), डॉ. बाबासाहब आंबेडकर नाम से लोकप्रिय, भारतीय बहुज्ञ, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ, और समाजसुधारक थे।[2] उन्होंने दलित बौद्ध आंदोलन को प्रेरित किया और अछूतों (दलितों) से सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध अभियान चलाया था। श्रमिकों, किसानों और महिलाओं के अधिकारों का समर्थन भी किया था।[3] वे स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि एवं न्याय मंत्री, भारतीय संविधान के जनक एवं भारत गणराज्य के निर्माताओं में से एक थे।[4][5][6][7]

आंबेडकर विपुल प्रतिभा के छात्र थे। उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स दोनों ही विश्वविद्यालयों से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधियाँ प्राप्त कीं तथा विधि, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में शोध कार्य भी किये थे।[8] व्यावसायिक जीवन के आरंभिक भाग में ये अर्थशास्त्र के प्रोफेसर रहे एवं वकालत भी की तथा बाद का जीवन राजनीतिक गतिविधियों में अधिक बीता। इसके बाद आंबेडकर भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रचार और चर्चाओं में शामिल हो गए और पत्रिकाओं को प्रकाशित करने, राजनीतिक अधिकारों की वकालत करने और दलितों के लिए सामाजिक स्वतंत्रता की वकालत की और भारत के निर्माण में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।[9]

हिंदू पंथ में व्याप्त कुरूतियों और छुआछूत की प्रथा से तंग आकार सन 1956 में उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया था। सन 1990 में, उन्हें भारत रत्न, भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से मरणोपरांत सम्मानित किया गया था। 14 अप्रैल को उनका जन्म दिवस आंबेडकर जयंती के तौर पर भारत समेत दुनिया भर में मनाया जाता है।[10] डॉ. आंबेडकर की विरासत में लोकप्रिय संस्कृति में कई स्मारक और चित्रण शामिल हैं।[11][12]

परिचय

आंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को ब्रिटिश भारत के मध्य भारत प्रांत (अब मध्य प्रदेश) में स्थित महू नगर सैन्य छावनी में हुआ था।[13] वे रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई की १४ वीं व अंतिम संतान थे।[14] उनका परिवार कबीर पंथ को माननेवाला मराठी मूल का था और वो वर्तमान महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में आंबडवे गाँव के निवासी थे।[15] वे हिंदू महार जाति से संबंध रखते थे, जो तब अछूत कही जाती थी और इस कारण उन्हें सामाजिक और आर्थिक रूप से गहरा भेदभाव सहन करना पड़ता था।[16] भीमराव आंबेडकर के पूर्वज लंबे समय से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में कार्यरत रहे थे और उनके पिता रामजी सकपाल, भारतीय सेना की महू छावनी में सेवारत थे तथा यहां काम करते हुये वे सूबेदार के पद तक पहुँचे थे। उन्होंने मराठी और अंग्रेजी में औपचारिक शिक्षा प्राप्त की थी।[17]

अपनी जाति के कारण बालक भीम को सामाजिक प्रतिरोध का सामना करना पड़ रहा था। विद्यालयी पढ़ाई में सक्षम होने के बावजूद छात्र भीमराव को छुआछूत के कारण अनेक प्रकार की कठनाइयों का सामना करना पड़ता था। 7 नवम्बर 1900 को रामजी सकपाल ने सातारा की गवर्न्मेण्ट हाइस्कूल में अपने बेटे भीमराव का नाम भिवा रामजी आंबडवेकर दर्ज कराया। उनके बचपन का नाम 'भिवा' था। आंबेडकर का मूल उपनाम सकपाल की बजाय आंबडवेकर लिखवाया था, जो कि उनके आंबडवे गाँव से संबंधित था। क्योंकी कोकण प्रांत के लोग अपना उपनाम गाँव के नाम से रखते थे, अतः आंबेडकर के आंबडवे गाँव से आंबडवेकर उपनाम स्कूल में दर्ज करवाया गया। बाद में एक देवरुखे ब्राह्मण शिक्षक कृष्णा केशव आम्बेडकर जो उनसे विशेष स्नेह रखते थे, ने उनके नाम से 'आंबडवेकर' हटाकर अपना सरल 'आंबेडकर' उपनाम जोड़ दिया।[18] तब से आज तक वे आंबेडकर नाम से जाने जाते हैं। रामजी सकपाल परिवार के साथ बंबई (अब मुंबई) चले आये। अप्रैल 1906 में, जब भीमराव लगभग 15 वर्ष आयु के थे, तो नौ साल की लड़की रमाबाई से उनकी शादी कराई गई थी। तब वे पाँचवी अंग्रेजी कक्षा पढ़ रहे थे।[19] उन दिनों भारत में बाल-विवाह का प्रचलन था। 1913 में, आंबेडकर 22 वर्ष की आयु में संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए जहां उन्हें सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय (बड़ौदा के गायकवाड़) द्वारा स्थापित एक योजना के अंतर्गत न्यूयॉर्क नगर स्थित कोलंबिया

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शिक्षा के अवसर प्रदान करने के लिए तीन वर्ष के लिए 11.50 डॉलर प्रति माह बड़ौदा राज्य की छात्रवृत्ति प्रदान की गई थी। वहां पहुँचने के तुरन्त बाद वे लिविंगस्टन हॉल में पारसी मित्र नवल भातेना के साथ बस गए। जून 1915 में उन्होंने अपनी कला स्नातकोत्तर (एम.ए.) परीक्षा पास की, जिसमें अर्थशास्त्र प्रमुख विषय, और समाजशास्त्र, इतिहास, दर्शनशास्त्र और मानव विज्ञान यह अन्य विषय थे। उन्होंने स्नातकोत्तर के लिए प्राचीन भारतीय वाणिज्य (Ancient Indian Commerce) विषय पर शोध कार्य प्रस्तुत किया। आम्बेडकर जॉन डेवी और लोकतंत्र पर उनके काम से प्रभावित थे।

1916 में, उन्हें अपना दूसरा शोध कार्य, भारत का राष्ट्रीय लाभांश - एक ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक अध्ययन (National Dividend of India - A Historical and Analytical Study) के लिए दूसरी कला स्नातकोत्तर प्रदान की गई, और अन्ततः उन्होंने लंदन की राह ली। 1916 में अपने तीसरे शोध कार्य ब्रिटिश भारत में प्रांतीय वित्त का विकास (Evolution of Provincial Finance in British India) के लिए अर्थशास्त्र में पीएचडी प्राप्त की, अपने शोध कार्य को प्रकाशित करने के बाद १९२७ में अधिकृत रुप से पीएचडी प्रदान की गई।[23] ९ मई को, उन्होंने मानव विज्ञानी अलेक्जेंडर गोल्डनवेइज़र द्वारा आयोजित एक सेमिनार में भारत में जातियां: उनकी प्रणाली, उत्पत्ति और विकास नामक एक शोध पत्र प्रस्तुत किया, जो उनका पहला प्रकाशित पत्र था। ३ वर्ष तक की अवधि के लिये मिली हुई छात्रवृत्ति का उपयोग उन्होंने केवल दो वर्षों में अमेरिका में पाठ्यक्रम पूरा करने में किया और १९१६ में वे लंदन गए।[24] अक्टूबर 1916 में, ये लंदन चले गये और वहाँ उन्होंने ग्रेज़ इन में बैरिस्टर कोर्स (विधि अध्ययन) के लिए प्रवेश लिया, और साथ ही लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स में भी प्रवेश लिया जहां उन्होंने अर्थशास्त्र की डॉक्टरेट (Doctorate) थीसिस पर काम करना शुरू किया। जून 1917 में, विवश होकर उन्हें अपना अध्ययन अस्थायी तौरपर बीच में ही छोड़ कर भारत लौट आए क्योंकि बड़ौदा राज्य से उनकी छात्रवृत्ति समाप्त हो गई थी। लौटते समय उनके पुस्तक संग्रह को उस जहाज से अलग जहाज पर भेजा गया था जिसे जर्मन पनडुब्बी के टारपीडो द्वारा डुबो दिया गया। ये प्रथम विश्व युद्ध का काल था।[22] उन्हें चार साल के भीतर अपने थीसिस के लिए लंदन लौटने की अनुमति मिली। बड़ौदा राज्य के सेना सचिव के रूप में काम करते हुये अपने जीवन में अचानक फिर से आये भेदभाव से डॉ. भीमराव आंबेडकर निराश हो गये और अपनी नौकरी छोड़ एक निजी ट्यूटर और लेखाकार के रूप में काम करने लगे। यहाँ तक कि उन्होंने अपना परामर्श व्यवसाय भी आरम्भ किया जो उनकी सामाजिक स्थिति के कारण विफल रहा। अपने एक अंग्रेज जानकार मुंबई के पूर्व राज्यपाल लॉर्ड सिडनेम के कारण उन्हें मुंबई के सिडनेम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड इकोनोमिक्स मे राजनीतिक अर्थव्यवस्था के प्रोफेसर के रूप में नौकरी मिल गयी। १९२० में कोल्हापुर के शाहू महाराज, अपने पारसी मित्र के सहयोग और कुछ निजी बचत के सहयोग से वो एक बार फिर से इंग्लैंड वापस जाने में सफ़ल हो पाए तथा 1921 में विज्ञान स्नातकोत्तर (एम.एससी.) प्राप्त की, जिसके लिए उन्होंने 'प्रोवेन्शियल डीसेन्ट्रलाईज़ेशन ऑफ इम्पीरियल फायनेन्स इन ब्रिटिश इण्डिया' (ब्रिटिश भारत में शाही अर्थ व्यवस्था का प्रांतीय विकेंद्रीकरण) खोज ग्रन्थ प्रस्तुत किया था।[25][26][8] 1922 में, उन्हें ग्रेज इन ने बैरिस्टर-एट-लॉज डिग्री प्रदान की और उन्हें ब्रिटिश बार में बैरिस्टर के रूप में प्रवेश मिल गया। 1923 में, उन्होंने अर्थशास्त्र में डी.एससी. (डॉक्टर ऑफ साईंस) उपाधि प्राप्त की। उनकी थीसिस "दी प्राब्लम आफ दि रुपी: इट्स ओरिजिन एंड इट्स सॉल्यूशन" (रुपये की समस्या: इसकी उत्पत्ति और इसका समाधान) पर थी। लंदन का अध्ययन पूर्ण कर भारत वापस लौटते हुये भीमराव आंबेडकर तीन महीने जर्मनी में रुके, जहाँ उन्होंने अपना अर्थशास्त्र का अध्ययन, बॉन विश्वविद्यालय में जारी रखा। किंतु समय की कमी से वे विश्वविद्यालय में अधिक नहीं ठहर सकें। उनकी तीसरी और चौथी डॉक्टरेट्स (एलएल.डी., कोलंबिया विश्वविद्यालय, 1952 और डी.लिट., उस्मानिया विश्वविद्यालय, 1953) सम्मानित उपाधियाँ थीं।[27]

आंबेडकर ने कहा था "छुआछूत गुलामी से भी बदतर है।"[28] आंबेडकर बड़ौदा के रियासत राज्य द्वारा शिक्षित थे, अतः उनकी सेवा करने के लिए बाध्य थे। उन्हें महाराजा गायकवाड़ का सैन्य सचिव नियुक्त किया गया, लेकिन जातिगत भेदभाव के कारण कुछ ही समय में उन्हें यह नौकरी छोड़नी पडी। उन्होंने इस घटना को अपनी आत्मकथा, वेटिंग फॉर अ वीजा में वर्णित किया।[29] इसके बाद, उन्होंने अपने बढ़ते परिवार के लिए जीविका साधन खोजने के पुनः प्रयास किये, जिसके लिये उन्होंने लेखाकार के रूप में, व एक निजी शिक्षक के रूप में भी काम किया, और एक निवेश परामर्श व्यवसाय की स्थापना की, किन्तु ये सभी प्रयास तब विफल हो गये जब उनके ग्राहकों ने जाना कि ये अछूत हैं।[30] 1918 में, ये मुंबई में सिडेनहम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड इकोनॉमिक्स में राजनीतिक अर्थशास्त्र के प्रोफेसर बने। हालांकि वे छात्रों के साथ सफल रहे, फिर भी अन्य प्रोफेसरों ने उनके साथ पानी पीने के बर्तन साझा करने पर विरोध किया।[31]

भारत सरकार अधिनियम 1919, तैयार कर रही साउथबरो समिति के समक्ष, भारत के एक प्रमुख विद्वान के तौर पर आंबेडकर को साक्ष्य देने के लिये आमंत्रित किया गया। इस सुनवाई के दौरान, आंबेडकर ने दलितों और अन्य धार्मिक समुदायों के लिये पृथक निर्वाचिका और आरक्षण देने की वकालत की।[32] १९२० में, बंबई से, उन्होंने साप्ताहिक मूकनायक के प्रकाशन की शुरूआत की। यह प्रकाशन शीघ्र ही पाठकों मे लोकप्रिय हो गया, तब आंबेडकर ने इसका प्रयोग रूढ़िवादी हिंदू राजनेताओं व जातीय भेदभाव से लड़ने के प्रति भारतीय राजनैतिक समुदाय की अनिच्छा की आलोचना करने के लिये किया। उनके दलित वर्ग के एक सम्मेलन के दौरान दिये गये भाषण ने कोल्हापुर राज्य के स्थानीय शासक शाहू चतुर्थ को बहुत प्रभावित किया, जिनका आंबेडकर के साथ भोजन करना रूढ़िवादी समाज मे हलचल मचा गया।[33]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

बॉम्बे उच्च न्यायालय में विधि का अभ्यास करते हुए, उन्होंने अछूतों की शिक्षा को बढ़ावा देने और उन्हें ऊपर उठाने के प्रयास किये। उनका पहला संगठित प्रयास केंद्रीय संस्थान बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना था, जिसका उद्देश्य शिक्षा और सामाजिक-आर्थिक सुधार को बढ़ावा देने के साथ ही अवसादग्रस्त वर्गों के रूप में संदर्भित "बहिष्कार" के कल्याण करना था।[34] दलित अधिकारों की रक्षा के लिए, उन्होंने मूकनायक, बहिष्कृत भारत, समता, प्रबुद्ध भारत और जनता जैसी पांच पत्रिकाएं निकालीं।[35]

सन 1925 में, उन्हें बंबई प्रेसीडेंसी समिति में सभी यूरोपीय सदस्यों वाले साइमन कमीशन में काम करने के लिए नियुक्त किया गया।[36] इस आयोग के विरोध में भारत भर में विरोध प्रदर्शन हुये। जहां इसकी रिपोर्ट को अधिकतर भारतीयों द्वारा अनदेखा कर दिया गया, आंबेडकर ने अलग से भविष्य के संवैधानिक सुधारों के लिये सिफारिश लिखकर भेजीं।[37]

द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के अन्तर्गत 1 जनवरी 1818 को हुई कोरेगाँव की लड़ाई के दौरान मारे गये भारतीय महार सैनिकों के सम्मान में आंबेडकर ने 1 जनवरी 1927 को कोरेगाँव विजय स्मारक (जयस्तंभ) में एक समारोह आयोजित किया। यहाँ महार समुदाय से संबंधित सैनिकों के नाम संगमरमर के एक शिलालेख पर खुदवाये गये तथा कोरेगाँव को दलित स्वाभिमान का प्रतीक बनाया।[38]

सन 1927 तक, डॉ. आंबेडकर ने छुआछूत के विरुद्ध एक व्यापक एवं सक्रिय आंदोलन आरम्भ करने का निर्णय किया। उन्होंने सार्वजनिक आंदोलनों, सत्याग्रहों और जलूसों के द्वारा, पेयजल के सार्वजनिक संसाधन समाज के सभी वर्गों के लिये खुलवाने के साथ ही उन्होनें अछूतों को भी हिंदू मन्दिरों में प्रवेश करने का अधिकार दिलाने के लिये संघर्ष किया। उन्होंने महाड शहर में अछूत समुदाय को भी नगर की चवदार जलाशय से पानी लेने का अधिकार दिलाने कि लिये सत्याग्रह चलाया।[39] 1927 के अंत में सम्मेलन में, आंबेडकर ने जाति भेदभाव और "छुआछूत" को वैचारिक रूप से न्यायसंगत बनाने के लिए, प्राचीन हिंदू पाठ, मनुस्मृति, जिसके कई पद, खुलकर जातीय भेदभाव व जातिवाद का समर्थन करते हैं,[40] की सार्वजनिक रूप से निंदा की, और उन्होंने औपचारिक रूप से प्राचीन पाठ की प्रतियां जलाईं।[41] 25 दिसंबर 1927 को, उन्होंने हजारों अनुयायियों के नेतृत्व में मनुस्मृति की प्रतियों को जलाया।[42][43][44] इसकी स्मृति में प्रतिवर्ष 25 दिसंबर को मनुस्मृति दहन दिवस के रूप में आंबेडकरवादियों और हिंदू दलितों द्वारा मनाया जाता है।[45][46]

1930 में, आंबेडकर ने तीन महीने की तैयारी के बाद कालाराम मंदिर सत्याग्रह आरंभ किया। कालाराम मंदिर आंदोलन में लगभग 15,000 स्वयंसेवक इकट्ठे हुए, जिससे नाशिक की सबसे बड़ी प्रक्रियाएं हुईं। जुलूस का नेतृत्व एक सैन्य बैंड ने किया था, स्काउट्स का एक बैच, महिलाएं और पुरुष पहली बार भगवान को देखने के लिए अनुशासन, आदेश और दृढ़ संकल्प में चले गए थे। जब वे द्वार तक पहुँचे, तो द्वार ब्राह्मण अधिकारियों द्वारा बंद कर दिए गए।[47]

विचार-विमर्श

अब तक भीमराव आंबेडकर आज तक की सबसे बडी़ अछूत राजनीतिक हस्ती बन चुके थे। उन्होंने मुख्यधारा के महत्वपूर्ण राजनीतिक दलों की जाति व्यवस्था के उन्मूलन के प्रति उनकी कथित उदासीनता की कटु आलोचना की। आंबेडकर ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और उसके नेता महात्मा गाँधी की भी आलोचना की, उन्होंने उन पर अछूत समुदाय को एक करुणा की वस्तु के रूप मे प्रस्तुत करने का आरोप लगाया। आंबेडकर ब्रिटिश शासन की विफलताओं से भी असंतुष्ट थे, उन्होंने अछूत समुदाय के लिये एक ऐसी अलग राजनीतिक पहचान की वकालत की जिसमे कांग्रेस और ब्रिटिश दोनों की ही कोई दखल ना हो। लंदन में 8 अगस्त, 1930 को एक शोषित वर्ग के सम्मेलन यानी प्रथम गोलमेज सम्मेलन के दौरान आंबेडकर ने अपनी राजनीतिक दृष्टि को दुनिया के सामने रखा, जिसके अनुसार शोषित वर्ग की सुरक्षा उसके सरकार और कांग्रेस दोनों से स्वतंत्र होने में है।[14]

हमें अपना रास्ता स्वयं बनाना होगा और स्वयं... राजनीतिक शक्ति शोषितो की समस्याओं का निवारण नहीं हो सकती, उनका उद्धार समाज मे उनका उचित स्थान पाने में निहित है। उनको अपना रहने का बुरा तरीका बदलना होगा... उनको शिक्षित होना चाहिए... एक बड़ी आवश्यकता उनकी हीनता की भावना को झकझोरने और उनके अंदर उस दैवीय असंतोष की स्थापना करने की है जो सभी उँचाइयों का स्रोत है।[14] अब तक भीमराव आंबेडकर आज तक की सबसे बडी़ अछूत राजनीतिक हस्ती बन चुके थे। उन्होंने मुख्यधारा के महत्वपूर्ण राजनीतिक दलों की जाति व्यवस्था के उन्मूलन के प्रति उनकी कथित उदासीनता की कटु आलोचना की। आंबेडकर ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और उसके नेता महात्मा गाँधी की भी आलोचना की, उन्होंने उन पर अछूत समुदाय को एक करुणा की वस्तु के रूप मे प्रस्तुत करने का आरोप लगाया। आंबेडकर ब्रिटिश शासन की विफलताओं से भी असंतुष्ट थे, उन्होंने अछूत समुदाय के लिये एक ऐसी अलग राजनीतिक पहचान की वकालत की जिसमे कांग्रेस और ब्रिटिश दोनों की ही कोई दखल ना हो। लंदन में 8 अगस्त, 1930 को एक शोषित वर्ग के सम्मेलन यानी प्रथम गोलमेज सम्मेलन के दौरान आंबेडकर ने अपनी राजनीतिक दृष्टि को दुनिया के सामने रखा, जिसके अनुसार शोषित वर्ग की सुरक्षा उसके सरकार और कांग्रेस दोनों से स्वतंत्र होने में है।[14]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

हमें अपना रास्ता स्वयं बनाना होगा और स्वयं... राजनीतिक शक्ति शोषितो की समस्याओं का निवारण नहीं हो सकती, उनका उद्धार समाज मे उनका उचित स्थान पाने में निहित है। उनको अपना रहने का बुरा तरीका बदलना होगा... उनको शिक्षित होना चाहिए... एक बड़ी आवश्यकता उनकी हीनता की भावना को झकझोरने और उनके अंदर उस दैवीय असंतोष की स्थापना करने की है जो सभी उँचाइयों का स्रोत है।[14]

आंबेडकर ने कांग्रेस और गाँधी द्वारा चलाये गये नमक सत्याग्रह की आलोचना की। उनकी अछूत समुदाय मे बढ़ती लोकप्रियता और जन समर्थन के चलते उनको 1931 मे लंदन में होने वाले दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भी, भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। वहाँ उनकी अछूतों को पृथक निर्वाचिका देने के मुद्दे पर गाँधी से तीखी बहस हुई, एवं ब्रिटिश डॉ. आंबेडकर के विचारों से सहमत हुए। धर्म और जाति के आधार पर पृथक निर्वाचिका देने के प्रबल विरोधी गाँधी ने आशंका जताई, कि अछूतों को दी गयी पृथक निर्वाचिका, हिंदू समाज को विभाजित कर देगी। गाँधी को लगता था की, सवर्णों को छुआछूत भूलाने के लिए उनके हृदयपरिवर्तन होने के लिए उन्हें कुछ वर्षों की अवधि दी जानी चाहिए, किन्तु यह तर्क गलत सिद्ध हुआ जब सवर्णों हिंदूओं द्वारा पूना सन्धि के कई दशकों बाद भी छुआछूत का नियमित पालन होता रहा।[48] 1932 में जब ब्रिटिशों ने आंबेडकर के विचारों के साथ सहमति व्यक्त करते हुये अछूतों को पृथक निर्वाचिका देने की घोषणा की। कम्युनल अवार्ड की घोषणा गोलमेज सम्मेलन में हुए विचार विमर्श का ही परिणाम था। इस समझौते के तहत आंबेडकर द्वारा उठाई गई राजनैतिक प्रतिनिधित्व की मांग को मानते हुए पृथक निर्वाचिका में दलित वर्ग को दो वोटों का अधिकार प्रदान किया गया। इसके अंतर्गत एक वोट से दलित अपना प्रतिनिधि चुन सकते थे व दूसरी वोट से सामान्य वर्ग का प्रतिनिधि चुनने की आजादी थी। इस प्रकार दलित प्रतिनिधि केवल दलितों की ही वोट से चुना जाना था। इस प्रावधान से अब दलित प्रतिनिधि को चुनने में सामान्य वर्ग का कोई दखल शेष नहीं रहा था। लेकिन वहीं दलित वर्ग अपनी दूसरी वोट का इस्तेमाल करते हुए सामान्य वर्ग के प्रतिनिधि को चुनने से अपनी भूमिका निभा सकता था। ऐसी स्थिति में दलितों द्वारा चुना गया दलित उम्मीदवार दलितों की समस्या को अच्छी तरह से तो रख सकता था किन्तु गैर उम्मीदवार के लिए यह जरूरी नहीं था कि उनकी समस्याओं के समाधान का प्रयास भी करता।[49]

गाँधी इस समय पूना की येरवडा जेल में थे। कम्युनल एवार्ड की घोषणा होते ही गाँधी ने पहले तो प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर इसे बदलवाने की मांग की। लेकिन जब उनको लगा कि उनकी मांग पर कोई अमल नहीं किया जा रहा है तो उन्होंने मरण व्रत रखने की घोषणा कर दी। तभी आंबेडकर ने कहा कि "यदि गाँधी देश की स्वतंत्रता के लिए यह व्रत रखता तो अच्छा होता, लेकिन उन्होंने दलित लोगों के विरोध में यह व्रत रखा है, जो बेहद अफसोसजनक है। जबकि भारतीय ईसाइयो, मुसलमानों और सिखों को मिले इसी (पृथक निर्वाचन के) अधिकार को लेकर गाँधी की ओर से कोई आपत्ति नहीं आई।" उन्होंने यह भी कहा कि गाँधी कोई अमर व्यक्ति नहीं हैं। भारत में न जाने कितने ऐसे लोगों ने जन्म लिया और चले गए। आंबेडकर ने कहा कि गाँधी की जान बचाने के लिए वह दलितों के हितों का त्याग नहीं कर सकते। अब मरण व्रत के कारण गाँधी की तबियत लगातार बिगड रही थी। गाँधी के प्राणों पर भारी संकट आन पड़ा। और पूरा हिंदू समाज आंबेडकर का विरोधी बन गया।[50]

देश में बढ़ते दबाव को देख आंबेडकर 24 सितम्बर 1932 को शाम पांच बजे येरवडा जेल पहुँचे। यहां गाँधी और आंबेडकर के बीच समझौता हुआ, जो बाद में पूना पैक्ट के नाम से जाना गया। इस समझौते मे आंबेडकर ने दलितों को कम्यूनल अवॉर्ड में मिले पृथक निर्वाचन के अधिकार को छोड़ने की घोषणा की। लेकिन इसके साथ हीं कम्युनल अवार्ड से मिली 78 आरक्षित सीटों की बजाय पूना पैक्ट में आरक्षित सीटों की संख्या बढ़ा कर 148 करवा ली। इसके साथ ही अछूत लोगो के लिए प्रत्येक प्रांत मे शिक्षा अनुदान मे पर्याप्त राशि नियत करवाईं और सरकारी नौकरियों से बिना किसी भेदभाव के दलित वर्ग के लोगों की भर्ती को सुनिश्चित किया और इस तरह से आम्बेडकर ने महात्मा गाँधी की जान बचाई। आंबेडकर इस समझौते से असमाधानी थे, उन्होंने गाँधी के इस अनशन को अछूतों को उनके राजनीतिक अधिकारों से वंचित करने और उन्हें उनकी माँग से पीछे हटने के लिये दवाब डालने के लिये गाँधी द्वारा खेला गया एक नाटक करार दिया। 1942 में आंबेडकर ने इस समझौते का धिक्कार किया, 'स्टेट ऑफ मायनॉरिटी' इस ग्रंथ में भी पूना पैक्ट संबंधी नाराजगी व्यक्त की हैं। भारतीय रिपब्लिकन पार्टी द्वारा भी इससे पहले कई बार धिक्कार सभाएँ हुई हैं।[51]

परिणाम

आम्बेडकर का राजनीतिक कैरियर 1926 में शुरू हुआ और 1956 तक वो राजनीतिक क्षेत्र में विभिन्न पदों पर रहे। दिसंबर 1926 में, बॉम्बे के गवर्नर ने उन्हें बॉम्बे विधान परिषद के सदस्य के रूप में नामित किया; उन्होंने अपने कर्तव्यों को गंभीरता से लिया, और अक्सर आर्थिक मामलों पर भाषण दिये। वे 1936 तक बॉम्बे लेजिस्लेटिव काउंसिल के सदस्य थे।[52][53][54][55]

13 अक्टूबर 1935 को, आंबेडकर को सरकारी लॉ कॉलेज का प्रधानाचार्य नियुक्त किया गया और इस पद पर उन्होने दो वर्षो तक कार्य किया। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के रामजस कॉलेज के संस्थापक श्री राय केदारनाथ की मृत्यु के बाद इस कॉलेज के गवर्निंग बॉडी के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया।[56] आंबेडकर बंबई(अब मुंबई) में बस गये, उन्होंने यहाँ एक तीन मंजिला बड़े

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

घर 'राजगृह' का निर्माण कराया, जिसमें उनके निजी पुस्तकालय में 50,000 से अधिक पुस्तकें थीं, तब यह दुनिया का सबसे बड़ा निजी पुस्तकालय था।[57] इसी वर्ष 27 मई 1935 को उनकी पत्नी रमाबाई की एक लंबी बीमारी के बाद मृत्यु हो गई। रमाबाई अपनी मृत्यु से पहले तीर्थयात्रा के लिये पंढरपुर जाना चाहती थीं पर आंबेडकर ने उन्हे इसकी इजाज़त नहीं दी। आंबेडकर ने कहा की उस हिन्दू तीर्थ में जहाँ उनको अछूत माना जाता है, जाने का कोई औचित्य नहीं है, इसके बजाय उन्होंने उनके लिये एक नया पंढरपुर बनाने की बात कहीं।

1936 में, आंबेडकर ने स्वतंत्र लेबर पार्टी की स्थापना की, जो 1937 में केन्द्रीय विधान सभा चुनावों मे 13 सीटें जीती।[58] आंबेडकर को बॉम्बे विधान सभा के विधायक के रूप में चुना गया था। वह 1942 तक विधानसभा के सदस्य रहे और इस दौरान उन्होंने बॉम्बे विधान सभा में विपक्ष के नेता के रूप में भी कार्य किया।[59][60]

इसी वर्ष आंबेडकर ने 15 मई 1936 को अपनी पुस्तक 'एनीहिलेशन ऑफ कास्ट' (जाति प्रथा का विनाश) प्रकाशित की, जो उनके न्यूयॉर्क में लिखे एक शोधपत्र पर आधारित थी।[61] इस पुस्तक में आंबेडकर ने हिंदू धार्मिक नेताओं और जाति व्यवस्था की जोरदार आलोचना की।[62] उन्होंने अछूत समुदाय के लोगों को गाँधी द्वारा रचित शब्द हरिजन पुकारने के कांग्रेस के फैसले की कडी निंदा की।[63][57] बाद में, 1955 के बीबीसी साक्षात्कार में, उन्होंने गाँधी पर उनके गुजराती भाषा के पत्रों में जाति व्यवस्था का समर्थन करना तथा अंग्रेजी भाषा पत्रों में जाति व्यवस्था का विरोध करने का आरोप लगाया।[64][65]

ऑल इंडिया शेड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन एक सामाजिक-राजनीतिक संगठन था जिसकी स्थापना दलित समुदाय के अधिकारों के लिए अभियान चलाने के लिए 1942 में आंबेडकर द्वारा की गई थी। वर्ष 1942 से 1946 के दौरान, आंबेडकर ने रक्षा सलाहकार समिति और वाइसराय की कार्यकारी परिषद में श्रम मंत्री के रूप में सेवारत रहे।[66][67][68]

आंबेडकर ने भारत की आज़ादी की लड़ाई में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया था।[69] पाकिस्तान की मांग कर रहे मुस्लिम लीग के लाहौर रिज़ोल्यूशन (1940) के बाद, आंबेडकर ने "थॉट्स ऑन पाकिस्तान नामक 400 पृष्ठों वाला एक पुस्तक लिखा, जिसने अपने सभी पहलुओं में "पाकिस्तान" की अवधारणा का विश्लेषण किया। इसमें उन्होंने मुस्लिम लीग की मुसलमानों के लिए एक अलग देश पाकिस्तान की मांग की आलोचना की। साथ ही यह तर्क भी दिया कि हिंदुओं को मुसलमानों के पाकिस्तान का स्वीकार करना चाहिए। उन्होंने प्रस्तावित किया कि मुस्लिम और गैर-मुस्लिम बहुमत वाले हिस्सों को अलग करने के लिए पंजाब और बंगाल की प्रांतीय सीमाओं को फिर से तैयार किया जाना चाहिए। उन्होंने सोचा कि मुसलमानों को प्रांतीय सीमाओं को फिर से निकालने के लिए कोई आपत्ति नहीं हो सकती है। अगर उन्होंने किया, तो वे काफी "अपनी मांग की प्रकृति को समझ नहीं पाए"। विद्वान वेंकट ढलीपाल ने कहा कि थॉट्स ऑन पाकिस्तान ने "एक दशक तक भारतीय राजनीति को रोका"। इसने मुस्लिम लीग और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बीच संवाद के पाठ्यक्रम को निर्धारित किया, जो भारत के विभाजन के लिए रास्ता तय कर रहा था।[70] हालांकि वे मोहम्मद अली जिन्नाह और मुस्लिम लीग की विभाजनकारी सांप्रदायिक रणनीति के घोर आलोचक थे पर उन्होने तर्क दिया कि हिंदुओं और मुसलमानों को पृथक कर देना चाहिए और पाकिस्तान का गठन हो जाना चाहिये क्योकि एक ही देश का नेतृत्व करने के लिए, जातीय राष्ट्रवाद के चलते देश के भीतर और अधिक हिंसा पनपेगी। उन्होंने हिंदू और मुसलमानों के सांप्रदायिक विभाजन के बारे में अपने विचार के पक्ष मे ऑटोमोन साम्राज्य और चेकोस्लोवाकिया के विघटन जैसी ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख किया। उन्होंने पूछा कि क्या पाकिस्तान की स्थापना के लिये पर्याप्त कारण मौजूद थे? और सुझाव दिया कि हिंदू और मुसलमानों के बीच के मतभेद एक कम कठोर कदम से भी मिटाना संभव हो सकता था। उन्होंने लिखा है कि पाकिस्तान को अपने अस्तित्व का औचित्य सिद्ध करना चाहिये। कनाडा जैसे देशों मे भी सांप्रदायिक मुद्दे हमेशा से रहे हैं पर आज भी अंग्रेज और फ्रांसीसी एक साथ रहते हैं, तो क्या हिन्दू और मुसलमान भी साथ नहीं रह सकते। उन्होंने चेताया कि दो देश बनाने के समाधान का वास्तविक क्रियान्वयन अत्यंत कठिनाई भरा होगा। विशाल जनसंख्या के स्थानान्तरण के साथ सीमा विवाद की समस्या भी रहेगी। भारत की स्वतंत्रता के बाद होने वाली हिंसा को ध्यान में रख कर की गई यह भविष्यवाणी सही थी। [71]

"व्हॉट काँग्रेस एंड गाँधी हैव डन टू द अनटचेबल्स?" (काँग्रेस और गाँधी ने अछूतों के लिये क्या किया?) इस किताब के साथ, आंबेडकर ने गाँधी और कांग्रेस दोनो पर अपने हमलों को तीखा कर दिया, उन्होंने उन पर ढोंग करने का आरोप लगाया।[72]

आंबेडकर ने अपनी राजनीतिक पार्टी को अखिल भारतीय अनुसूचित जाति फेडरेशन (शेड्युल्ड कास्ट फेडरेशन) में बदलते देखा, हालांकि 1946 में आयोजित भारत के संविधान सभा के लिए हुये चुनाव में खराब प्रदर्शन किया। बाद में वह बंगाल जहां मुस्लिम लीग सत्ता में थी वहां से संविधान सभा में चुने गए थे।[73] आंबेडकर ने बॉम्बे उत्तर में से 1952 का पहला भारतीय लोकसभा चुनाव लड़ा, लेकिन उनके पूर्व सहायक और कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार नारायण काजोलकर से हार गए। 1952 में आंबेडकर राज्य सभा के सदस्य बन गए। उन्होंने भंडारा से 1954 के उपचुनाव में फिर से लोकसभा में प्रवेश करने की कोशिश की, लेकिन वे तीसरे स्थान पर रहे (कांग्रेस पार्टी जीती)। 1957 में दूसरे आम चुनाव के समय तक आंबेडकर की निर्वाण (मृत्यु) हो गया था।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

आंबेडकर दो बार भारतीय संसद के ऊपरी सदन राज्य सभा में महाराष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने वाले भारत की संसद के सदस्य बने थे। राज्यसभा सदस्य के रूप में उनका पहला कार्यकाल 3 अप्रैल 1952 से 2 अप्रैल 1956 के बीच था, और उनका दूसरा कार्यकाल 3 अप्रैल 1956 से 2 अप्रैल 1962 तक आयोजित किया जाना था, लेकिन कार्यकाल समाप्त होने से पहले, 6 दिसंबर 1956 को उनका निधन हो गया।[74]

30 सितंबर 1956 को, आंबेडकर ने "अनुसूचित जाति महासंघ" को खारिज करके "रिपब्लिकन पार्टी ऑफ़ इंडिया" की स्थापना की घोषणा की थी, लेकिन पार्टी के गठन से पहले, 6 दिसंबर 1956 को उनका निधन हो गया। उसके बाद, उनके अनुयायियों और कार्यकर्ताओं ने इस पार्टी के गठन की योजना बनाई। पार्टी की स्थापना के लिए 1 अक्टूबर 1957 को प्रेसीडेंसी की एक बैठक नागपुर में आयोजित की गई थी। इस बैठक में एन. शिवराज, यशवंत आंबेडकर, पी. टी. बोराले, ए. जी. पवार, दत्ता कट्टी, डी. ए. रूपवते उपस्थित थे। 3 अक्टूबर 1957 को रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया का गठन किया गया और एन. शिवराज को पार्टी के अध्यक्ष के रूप में चुना गया था।[75]

आंबेडकर ने अपनी पुस्तक हू वर द शुद्राज़? (शुद्र कौन थे?) के द्वारा हिंदू जाति व्यवस्था के पदानुक्रम में सबसे नीची जाति यानी शुद्रों के अस्तित्व मे आने की व्याख्या की।[76] उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि किस तरह से अतिशुद्र (अछूत), शुद्रों से अलग हैं। 1948 में हू वेयर द शुद्राज़? की उत्तरकथा द अनटचेबलस: ए थीसिस ऑन द ओरिजन ऑफ अनटचेबिलिटी (अछूत: छुआछूत के मूल पर एक शोध) में आंबेडकर ने हिंदू धर्म को लताड़ा।

हिंदू सभ्यता .... जो मानवता को दास बनाने और उसका दमन करने की एक क्रूर युक्ति है और इसका उचित नाम बदनामी होगा। एक सभ्यता के बारे मे और क्या कहा जा सकता है जिसने लोगों के एक बहुत बड़े वर्ग को विकसित किया जिसे... एक मानव से हीन समझा गया और जिसका स्पर्श मात्र प्रदूषण फैलाने का पर्याप्त कारण है?[72]

आंबेडकर दक्षिण एशिया के इस्लाम की रीतियों के भी बड़े आलोचक थे। उन्होने भारत विभाजन का तो पक्ष लिया पर मुस्लिमो में व्याप्त बाल विवाह की प्रथा और महिलाओं के साथ होने वाले दुर्व्यवहार की घोर निंदा की। उन्होंने कहा,

बहुविवाह और रखैल रखने के दुष्परिणाम शब्दों में व्यक्त नहीं किये जा सकते जो विशेष रूप से एक मुस्लिम महिला के दुःख के स्रोत हैं। जाति व्यवस्था को ही लें, हर कोई कहता है कि इस्लाम गुलामी और जाति से मुक्त होना चाहिए, जबकि गुलामी अस्तित्व में है और इसे इस्लाम और इस्लामी देशों से समर्थन मिला है। जबकि कुरान में निहित गुलामों के न्याय और मानवीय उपचार के बारे में पैगंबर द्वारा किए गए नुस्खे प्रशंसनीय हैं, इस्लाम में ऐसा कुछ भी नहीं है जो इस अभिशाप के उन्मूलन का समर्थन करता हो। अगर गुलामी खत्म भी हो जाये पर फिर भी मुसलमानों के बीच जाति व्यवस्था रह जायेगी।[77]

उन्होंने लिखा कि मुस्लिम समाज मे तो हिंदू समाज से भी कही अधिक सामाजिक बुराइयां है और मुसलमान उन्हें " भाईचारे " जैसे नरम शब्दों के प्रयोग से छुपाते हैं। उन्होंने मुसलमानो द्वारा अर्ज़ल वर्गों के ख़िलाफ़ भेदभाव जिन्हें " निचले दर्जे का " माना जाता था के साथ ही मुस्लिम समाज में महिलाओं के उत्पीड़न की दमनकारी पर्दा प्रथा की भी आलोचना की। उन्होंने कहा हालाँकि पर्दा हिंदुओं मे भी होता है पर उसे धर्मिक मान्यता केवल मुसलमानों ने दी है। उन्होंने इस्लाम मे कट्टरता की आलोचना की जिसके कारण इस्लाम की नातियों का अक्षरक्ष अनुपालन की बद्धता के कारण समाज बहुत कट्टर हो गया है और उसे को बदलना बहुत मुश्किल हो गया है। उन्होंने आगे लिखा कि भारतीय मुसलमान अपने समाज का सुधार करने में विफल रहे हैं जबकि इसके विपरीत तुर्की जैसे देशों ने अपने आपको बहुत बदल लिया है।[77][78]

"सांप्रदायिकता" से पीड़ित हिंदुओं और मुसलमानों दोनों समूहों ने सामाजिक न्याय की माँग की उपेक्षा की है।[77]

10-12 साल हिंदू धर्म के अंतर्गत रहते हुए बाबासाहब आंबेडकर ने हिंदू धर्म तथा हिंदू समाज को सुधारने, समता तथा सम्मान प्राप्त करने के लिए तमाम प्रयत्न किए, परन्तु सवर्ण हिन्दुओं का ह्रदय परिवर्तन न हुआ। उल्टे उन्हें निंदित किया गया और हिंदू धर्म विनाशक तक कहा गया। उसके बाद उन्होंने कहा था की, “हमने हिंदू समाज में समानता का स्तर प्राप्त करने के लिए हर तरह के प्रयत्न और सत्याग्रह किए, परन्तु सब निरर्थक सिद्ध हुए। हिंदू समाज में समानता के लिए कोई स्थान नहीं है।” हिंदू समाज का यह कहना था कि “मनुष्य धर्म के लिए हैं” जबकि आंबेडकर का मानना था कि "धर्म मनुष्य के लिए हैं।" आंबेडकर ने कहा कि ऐसे धर्म का कोई मतलब नहीं जिसमें मनुष्यता का कुछ भी मूल्य नहीं। जो अपने ही धर्म के अनुयायिओं (अछूतों को) को धर्म शिक्षा प्राप्त नहीं करने देता, नौकरी करने में बाधा पहुँचाता है, बात-बात पर अपमानित करता है और यहाँ तक कि पानी तक नहीं मिलने देता ऐसे धर्म में रहने का कोई मतलब नहीं। आंबेडकर ने हिंदू धर्म त्यागने की घोषणा किसी भी प्रकार की दुश्मनी व हिंदू धर्म के विनाश के लिए नहीं की थी बल्कि उन्होंने इसका फैसला कुछ मौलिक सिद्धांतों को लेकर किया जिनका हिंदू धर्म में बिल्कुल तालमेल नहीं था।[79]

13 अक्टूबर 1935 को नासिक के निकट येवला में एक सम्मेलन में बोलते हुए आंबेडकर ने धर्म परिवर्तन करने की घोषणा की,

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

"हालाँकि मैं एक अछूत हिंदू के रूप में पैदा हुआ हूँ, लेकिन मैं एक हिंदू के रूप में हरगिज नहीं मरूँगा!"

उन्होंने अपने अनुयायियों से भी हिंदू धर्म छोड़ कोई और धर्म अपनाने का आह्वान किया।[80] उन्होंने अपनी इस बात को भारत भर में कई सार्वजनिक सभाओं में भी दोहराया। इस धर्म-परिवर्तन की घोषणा के बाद हैदराबाद के इस्लाम धर्म के निज़ाम से लेकर कई ईसाई मिशनरियों ने उन्हें करोड़ों रुपये का प्रलोभन भी दिया पर उन्होनें सभी को ठुकरा दिया। निःसन्देह वो भी चाहते थे कि दलित समाज की आर्थिक स्थिति में सुधार हो, पर पराए धन पर आश्रित होकर नहीं बल्कि उनके परिश्रम और संगठन होने से स्थिति में सुधार आए। इसके अलावा आंबेडकर ऐसे धर्म को चुनना चाहते थे जिसका केन्द्र मनुष्य और नैतिकता हो, उसमें स्वतंत्रता, समता तथा बंधुत्व हो। वो किसी भी हाल में ऐसे धर्म को नहीं अपनाना चाहते थे जो वर्णभेद तथा छुआछूत की बीमारी से जकड़ा हो और ना ही वो ऐसा धर्म चुनना चाहते थे जिसमें अंधविश्वास तथा पाखंडवाद हो।[57] 21 मार्च, 1936 के 'हरिजन' में गाँधी ने लिखा की, 'जबसे डॉक्टर आंबेडकर ने धर्म-परिवर्तन की धमकी का बमगोला हिंदू समाज में फेंका है, उन्हें अपने निश्चय से डिगाने की हरचंद कोशिशें की जा रही हैं.' यहीं गाँधी जी आगे एक जगह लिखते हैं, 'हाँ ऐसे समय में (सवर्ण) सुधारकों को अपना हृदय टटोलना जरूरी है। उसे सोचना चाहिए कि कहीं मेरे या मेरे पड़ोसियों के व्यवहार से दुखी होकर तो ऐसा नहीं किया जा रहा है। ...यह तो एक मानी हुई बात है कि अपने को सनातनी कहने वाले हिन्दुओं की एक बड़ी संख्या का व्यवहार ऐसा है जिससे देशभर के हरिजनों को अत्यधिक असुविधा और खीज होती है। आश्चर्य यही है कि इतने ही हिन्दुओं ने हिन्दू धर्म क्यों छोड़ा, और दूसरों ने भी क्यों नहीं छोड़ दिया? यह तो उनकी प्रशंसनीय वफादारी या हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता ही है जो उसी धर्म के नाम पर इतनी निर्दयता होते हुए भी लाखों हरिजन उसमें बने हुए हैं।'[81]

आंबेडकर ने धर्म परिवर्तन की घोषणा करने के बाद 21 वर्ष तक के समय के बीच उन्होंने ने विश्व के सभी प्रमुख धर्मों का गहन अध्ययन किया। उनके द्वारा इतना लंबा समय लेने का मुख्य कारण यह भी था कि वो चाहते थे कि जिस समय वो धर्म परिवर्तन करें उनके साथ ज्यादा से ज्यादा उनके अनुयायी धर्मान्तरण करें। आंबेडकर बौद्ध धर्म को पसन्द करते थे क्योंकि उसमें तीन सिद्धांतों का समन्वित रूप मिलता है जो किसी अन्य धर्म में नहीं मिलता। बौद्ध धर्म प्रज्ञा (अंधविश्वास तथा अतिप्रकृतिवाद के स्थान पर बुद्धि का प्रयोग), करुणा (प्रेम) और समता (समानता) की शिक्षा देता है। उनका कहना था कि मनुष्य इन्हीं बातों को शुभ तथा आनंदित जीवन के लिए चाहता है। देवता और आत्मा समाज को नहीं बचा सकते। आंबेडकर के अनुसार सच्चा धर्म वो ही है जिसका केन्द्र मनुष्य तथा नैतिकता हो, विज्ञान अथवा बौद्धिक तत्व पर आधारित हो, न कि धर्म का केन्द्र ईश्वर, आत्मा की मुक्ति और मोक्ष। साथ ही उनका कहना था धर्म का कार्य विश्व का पुनर्निर्माण करना होना चाहिए ना कि उसकी उत्पत्ति और अंत की व्याख्या करना। वह जनतांत्रिक समाज व्यवस्था के पक्षधर थे, क्योंकि उनका मानना था ऐसी स्थिति में धर्म मानव जीवन का मार्गदर्शक बन सकता है। ये सब बातें उन्हें एकमात्र बौद्ध धर्म में मिलीं।[82]

गाँधी व कांग्रेस की कटु आलोचना के बावजूद आंबेडकर की प्रतिष्ठा एक अद्वितीय विद्वान और विधिवेत्ता की थी। जिसके कारण जब, 15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, कांग्रेस के नेतृत्व वाली नई सरकार अस्तित्व में आई तो उसने आंबेडकर को देश के पहले क़ानून एवं न्याय मंत्री के रूप में सेवा करने के लिए आमंत्रित किया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। 29 अगस्त 1947 को, आंबेडकर को स्वतंत्र भारत के नए संविधान की रचना के लिए बनी संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया। संविधान निर्माण के कार्य में आंबेडकर का शुरुआती बौद्ध संघ रीतियों और अन्य बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन भी काम आया।[83]

आंबेडकर एक बुद्धिमान संविधान विशेषज्ञ थे, उन्होंने लगभग 60 देशों के संविधानों का अध्ययन किया था। आंबेडकर को "भारत के संविधान का पिता" के रूप में मान्यता प्राप्त है।[84][85] संविधान सभा में, मसौदा समिति के सदस्य टी॰ टी॰ कृष्णामाचारी ने कहा:

"अध्यक्ष महोदय, मैं सदन में उन लोगों में से एक हूं, जिन्होंने डॉ. आंबेडकर की बात को बहुत ध्यान से सुना है। मैं इस संविधान की ड्राफ्टिंग के काम में जुटे काम और उत्साह के बारे में जानता हूं।" उसी समय, मुझे यह महसूस होता है कि इस समय हमारे लिए जितना महत्वपूर्ण संविधान तैयार करने के उद्देश्य से ध्यान देना आवश्यक था, वह ड्राफ्टिंग कमेटी द्वारा नहीं दिया गया। सदन को शायद सात सदस्यों की जानकारी है। आपके द्वारा नामित, एक ने सदन से इस्तीफा दे दिया था और उसे बदल दिया गया था। एक की मृत्यु हो गई थी और उसकी जगह कोई नहीं लिया गया था। एक अमेरिका में था और उसका स्थान नहीं भरा गया और एक अन्य व्यक्ति राज्य के मामलों में व्यस्त था, और उस सीमा तक एक शून्य था। एक या दो लोग दिल्ली से बहुत दूर थे और शायद स्वास्थ्य के कारणों ने उन्हें भाग लेने की अनुमति नहीं दी। इसलिए अंततः यह हुआ कि इस संविधान का मसौदा तैयार करने का सारा भार डॉ. आंबेडकर पर पड़ा और मुझे कोई संदेह नहीं है कि हम उनके लिए आभारी हैं। इस कार्य को प्राप्त करने के बाद मैं ऐसा मानता हूँ कि यह निस्संदेह सराहनीय है।"[86][87]

ग्रैनविले ऑस्टिन ने 'पहला और सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक दस्तावेज' के रूप में आंबेडकर द्वारा तैयार भारतीय संविधान का वर्णन किया। 'भारत के अधिकांश संवैधानिक प्रावधान या तो सामाजिक क्रांति के उद्देश्य को आगे बढ़ाने या इसकी उपलब्धि के लिए जरूरी स्थितियों की स्थापना करके इस क्रांति को बढ़ावा देने के प्रयास में सीधे पहुँचे हैं।'[88]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

आंबेडकर द्वारा तैयार किए गए संविधान के पाठ में व्यक्तिगत नागरिकों के लिए नागरिक स्वतंत्रता की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए संवैधानिक गारंटी और सुरक्षा प्रदान की गई है, जिसमें धर्म की आजादी, छुआछूत को खत्म करना, और भेदभाव के सभी रूपों का उल्लंघन करना शामिल है। आंबेडकर ने महिलाओं के लिए व्यापक आर्थिक और सामाजिक अधिकारों के लिए तर्क दिया, और अनुसूचित जातियों (एससी) और अनुसूचित जनजातियों (एसटी) और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के सदस्यों के लिए नागरिक सेवाओं, स्कूलों और कॉलेजों में नौकरियों के आरक्षण की व्यवस्था शुरू करने के लिए असेंबली का समर्थन जीता, जो कि सकारात्मक कार्रवाई थी।[89] भारत के सांसदों ने इन उपायों के माध्यम से भारत की निराशाजनक कक्षाओं के लिए सामाजिक-आर्थिक असमानताओं और अवसरों की कमी को खत्म करने की उम्मीद की।[90] संविधान सभा द्वारा 26 नवंबर 1949 को संविधान अपनाया गया था।[91] अपने काम को पूरा करने के बाद, बोलते हुए, आंबेडकर ने कहा:

मैं महसूस करता हूं कि संविधान, साध्य (काम करने लायक) है, यह लचीला है पर साथ ही यह इतना मज़बूत भी है कि देश को शांति और युद्ध दोनों के समय जोड़ कर रख सके। वास्तव में, मैं कह सकता हूँ कि अगर कभी कुछ गलत हुआ तो इसका कारण यह नही होगा कि हमारा संविधान खराब था बल्कि इसका उपयोग करने वाला मनुष्य अधम था।

आंबेडकर ने भारत के संविधान के अनुच्छेद 370 का विरोध किया, जिसने जम्मू-कश्मीर राज्य को विशेष दर्जा दिया, और जिसे उनकी इच्छाओं के ख़िलाफ़ संविधान में शामिल किया गया था। बलराज माधोक ने कहा था कि, आंबेडकर ने कश्मीरी नेता शेख अब्दुल्ला को स्पष्ट रूप से बताया था: "आप चाहते हैं कि भारत को आपकी सीमाओं की रक्षा करनी चाहिए, उसे आपके क्षेत्र में सड़कों का निर्माण करना चाहिए, उसे आपको अनाज की आपूर्ति करनी चाहिए, और कश्मीर को भारत के समान दर्जा देना चाहिए। लेकिन भारत सरकार के पास केवल सीमित शक्तियां होनी चाहिए और भारतीय लोगों को कश्मीर में कोई अधिकार नहीं होना चाहिए। इस प्रस्ताव को सहमति देने के लिए, मैं भारत के कानून मंत्री के रूप में भारत के हितों के खिलाफ एक विश्वासघाती बात होंगी, यह कभी नहीं करेगा। "फिर अब्दुल्ला ने नेहरू से संपर्क किया, जिन्होंने उन्हें गोपाल स्वामी अयंगार को निर्देशित किया, जिन्होंने बदले में वल्लभभाई पटेल से संपर्क किया और कहा कि नेहरू ने स्के का वादा किया था। अब्दुल्ला विशेष स्थिति। पटेल द्वारा अनुच्छेद पारित किया गया, जबकि नेहरू एक विदेश दौरे पर थे। जिस दिन लेख चर्चा के लिए आया था, आम्बेडकर ने इस पर सवालों का जवाब नहीं दिया लेकिन अन्य लेखों पर भाग लिया। सभी तर्क कृष्णा स्वामी अयंगार द्वारा किए गए थे।[92][93][94] आंबेडकर वास्तव में समान नागरिक संहिता के पक्षधर थे और कश्मीर के मामले में धारा 370 का विरोध करते थे। आंबेडकर का भारत आधुनिक, वैज्ञानिक सोच और तर्कसंगत विचारों का देश होता, उसमें पर्सनल कानून की जगह नहीं होती।[96] संविधान सभा में बहस के दौरान, आंबेडकर ने एक समान नागरिक संहिता को अपनाने की सिफारिश करके भारतीय समाज में सुधार करने की अपनी इच्छा प्रकट कि।[97][98] 1951 मे संसद में अपने हिन्दू कोड बिल (हिंदू संहिता विधेयक) के मसौदे को रोके जाने के बाद आंबेडकर ने मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया। हिंदू कोड बिल द्वारा भारतीय महिलाओं को कई अधिकारों प्रदान करने की बात कहीं गई थी। इस मसौदे में उत्तराधिकार, विवाह और अर्थव्यवस्था के कानूनों में लैंगिक समानता की मांग की गयी थी।[99] हालांकि प्रधानमंत्री नेहरू, कैबिनेट और कुछ अन्य कांग्रेसी नेताओं ने इसका समर्थन किया पर राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद एवं वल्लभभाई पटेल समेत संसद सदस्यों की एक बड़ी संख्या इसके ख़िलाफ़ थी। आंबेडकर ने 1952 में बॉम्बे (उत्तर मध्य) निर्वाचन क्षेत्र में लोक सभा का चुनाव एक निर्दलीय उम्मीदवार के रूप मे लड़ा पर वह हार गये। इस चुनाव में आंबेडकर को 123,576 वोट तथा नारायण सडोबा काजोलकर को 138,137 वोटों का मतदान किया गया था।[100][101][102] मार्च 1952 में उन्हें संसद के ऊपरी सदन यानि राज्य सभा के लिए नियुक्त किया गया और इसके बाद उनकी मृत्यु तक वो इस सदन के सदस्य रहे।[103]

आंबेडकर विदेश से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की डिग्री लेने वाले पहले भारतीय थे।[104] उन्होंने तर्क दिया कि औद्योगिकीकरण और कृषि विकास से भारतीय अर्थव्यवस्था में वृद्धि हो सकती है।[105] उन्होंने भारत में प्राथमिक उद्योग के रूप में कृषि में निवेश पर बल दिया। शरद पवार के अनुसार, आंबेडकर के दर्शन ने सरकार को अपने खाद्य सुरक्षा लक्ष्य हासिल करने में मदद की।[106] आंबेडकर ने राष्ट्रीय आर्थिक और सामाजिक विकास की वकालत की, शिक्षा, सार्वजनिक स्वच्छता, समुदाय स्वास्थ्य, आवासीय सुविधाओं को बुनियादी सुविधाओं के रूप में जोर दिया।[105] उन्होंने ब्रिटिश शासन की वजह से हुए विकास के नुकसान की गणना की।[107]

आंबेडकर को एक अर्थशास्त्री के तौर पर प्रशिक्षित किया गया था, और 1921 तक एक पेशेवर अर्थशास्त्री बन चूके थे। जब वह एक राजनीतिक नेता बन गए तो उन्होंने अर्थशास्त्र पर तीन विद्वत्वापूर्ण पुस्तकें लिखीं:

- अॅडमिनिस्ट्रेशन अँड फायनान्स ऑफ दी इस्ट इंडिया कंपनी
- द इव्हॅल्युएशन ऑफ प्रॉव्हिन्शियल फायनान्स इन् ब्रिटिश इंडिआ
- द प्रॉब्लम ऑफ द रूपी : इट्स ओरिजिन ॲन्ड इट्स सोल्युशन[108][109][110]

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई), आंबेडकर के विचारों पर आधारित था, जो उन्होंने हिल्टन यंग कमिशन को प्रस्तुत किये थे।[108][110][111][112]

आंबेडकर की पहली पत्नी रमाबाई की लंबी बीमारी के बाद १९३५ में निधन हो गया। १९४० के दशक के अंत में भारतीय संविधान के मसौदे को पूरा करने के बाद, वह नीन्द के अभाव से पीड़ित थे, उनके पैरों में न्यूरोपैथिक दर्द था, और इंसुलिन और होम्योपैथिक दवाएं ले रहे थे। वह उपचार के लिए बॉम्बे (मुम्बई) गए, और वहां डॉक्टर शारदा कबीर से मिले, जिनके साथ उन्होंने १५ अप्रैल १९४८ को नई दिल्ली में अपने घर पर विवाह किया था। डॉक्टरों ने एक ऐसे जीवन साथी की सिफारिश की जो एक अच्छा खाना पकाने वाली हो और उनकी देखभाल करने के लिए चिकित्सा ज्ञान हो।[113] डॉ॰ शारदा कबीर ने विवाह के पश्चात सविता आंबेडकर नाम अपनाया और उनके बाकी जीवन में उनकी देखभाल की।[114] सविता आंबेडकर, जिन्हें 'माई' या 'माइसाहेब' कहा जाता था, का २९ मई २००३ को नई दिल्ली के मेहरौली में ९३ वर्ष की आयु में निधन हो गया।[115]

सन् 1950 के दशक में भीमराव आंबेडकर बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षित हुए और बौद्ध भिक्षुओं व विद्वानों के एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए श्रीलंका (तब सिलोन) गये।[116] पुणे के पास एक नया बौद्ध विहार को समर्पित करते हुए, डॉ. आंबेडकर ने घोषणा की कि वे बौद्ध धर्म पर एक पुस्तक लिख रहे हैं और जैसे ही यह समाप्त होगी वो औपचारिक रूप से बौद्ध धर्म अपना लेंगे।[117] 1954 में आंबेडकर ने म्यांमार का दो बार दौरा किया; दूसरी बार वो रंगून मे तीसरे विश्व बौद्ध फैलोशिप के सम्मेलन में भाग लेने के लिए गये।[118] 1955 में उन्होंने 'भारतीय बौद्ध महासभा' यानी 'बुद्धिस्ट सोसाइटी ऑफ इंडिया' की स्थापना की।[119] उन्होंने अपने अंतिम प्रसिद्ध ग्रंथ, 'द बुद्ध एंड हिज़ धम्म' को 1956 में पूरा किया। यह उनकी मृत्यु के पश्चात सन 1957 में प्रकाशित हुआ।[119] इस ग्रंथ की प्रस्तावना में आंबेडकर ने लिखा हैं कि — "मैं भगवान बुद्ध और उनके मूल धर्म की शरण जा रहा हूँ। मैं प्रचलित बौद्ध पन्थों से तटस्थ हूँ। मैं जिस बौद्ध धर्म को स्वीकार कर रहा हूँ, वह नव बौद्ध धर्म या नवयान हैं।[121] 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर शहर में डॉ. भीमराव आंबेडकर ने खुद और उनके समर्थकों के लिए एक औपचारिक सार्वजनिक धर्मांतरण समारोह का आयोजन किया। प्रथम डॉ. आंबेडकर ने अपनी पत्नी सविता एवं कुछ सहयोगियों के साथ भिक्षु महास्थवीर चंद्रमणी द्वारा पारंपरिक तरीके से त्रिरत्न और पंचशील को अपनाते हुये बौद्ध धर्म ग्रहण किया। इसके बाद उन्होंने अपने 5,00,000 अनुयायियो को त्रिरत्न, पंचशील और 22 प्रतिज्ञाएँ देते हुए नवयान बौद्ध धर्म में परिवर्तित किया।[117]

डॉक्टर भीमराव आंबेडकर जी व उनका का परिवार कबीर साहेब जी की विचारधारा से बहुत प्रभावित था तथा कबीर साहेब जी के ज्ञान को आधार बनाकर जीवन जीते थे। कबीर परमेश्वर जी ने पाखंडवाद तथा सामाजिक बुराइयों जैसे जातिवाद, गलत धार्मिक मान्यताएं, जीव हिंसा, नशाखोरी, आदि आदि को दूर किया।[122]

वे देवताओं के संजाल को तोड़कर एक ऐसे मुक्त मनुष्य की कल्पना कर रहे थे जो धार्मिक तो हो लेकिन ग़ैर-बराबरी को जीवन मूल्य न माने। हिंदू धर्म के बंधनों को पूरी तरह पृथक किया जा सके इसलिए आंबेडकर ने अपने बौद्ध अनुयायियों के लिए बाइस प्रतिज्ञाएँ स्वयं निर्धारित कीं जो बौद्ध धर्म के दर्शन का ही एक सार है। यह प्रतिज्ञाएं हिंदू धर्म की त्रिमूर्ति में अविश्वास, अवतारवाद के खंडन, श्राद्ध-तर्पण, पिंडदान के परित्याग, बुद्ध के सिद्धांतों और उपदेशों में विश्वास, ब्राह्मणों द्वारा निष्पादित होने वाले किसी भी समारोह न भाग लेने, मनुष्य की समानता में विश्वास, बुद्ध के आष्टांगिक मार्ग के अनुसरण, प्राणियों के प्रति दयालुता, चोरी न करने, झूठ न बोलने, शराब के सेवन न करने, असमानता पर आधारित हिंदू धर्म का त्याग करने और बौद्ध धर्म को अपनाने से संबंधित थीं।[123] नवयान लेकर आंबेडकर और उनके समर्थकों ने विषमतावादी हिन्दू धर्म और हिन्दू दर्शन की स्पष्ट निंदा की और उसे त्याग दिया। आंबेडकर ने दुसरे दिन 15 अक्टूबर को फीर वहाँ अपने 2 से 3 लाख अनुयायियों को बौद्ध धम्म की दीक्षा दी, यह वह अनुयायि थे जो 14 अक्तुबर के समारोह में नहीं पहुच पाये थे या देर से पहुचे थे। आंबेडकर ने नागपूर में करीब 8 लाख लोगों बौद्ध धर्म की दीक्षा दी, इसलिए यह भूमी दीक्षाभूमि नाम से प्रसिद्ध हुई। तिसरे दिन 16 अक्टूबर को आंबेडकर चंद्रपुर गये और वहां भी उन्होंने करीब 3,00,000 समर्थकों को बौद्ध धम्म की दीक्षा दी।[117][124] इस तरह केवल तीन दिन में आंबेडकर ने स्वयं 11 लाख से अधिक लोगों को बौद्ध धर्म में परिवर्तित कर विश्व के बौद्धों की संख्या 11 लाख बढा दी और भारत में बौद्ध धर्म को पुनर्जिवीत किया। इस घटना से कई लोगों एवं बौद्ध देशों में से अभिनंदन प्राप्त हुए। इसके बाद वे नेपाल में चौथे विश्व बौद्ध सम्मेलन मे भाग लेने के लिए काठमांडू गये। वहां वह काठमांडू शहर की दलित बस्तियों में गए थे। नेपाल का आंबेडकरवादी आंदोलन, दलित नेताओं द्वारा संचालित किया जाता है, तथा नेपाल के अधिकांश दलित नेता यह मानते हैं कि "आंबेडकर का दर्शन" ही जातिगत भेदभाव को मिटाने में सक्षम है।[125][118] उन्होंने अपनी अंतिम पांडुलिपि बुद्ध और कार्ल मार्क्स को 2 दिसंबर 1956 को पूरा किया।[126]

निष्कर्ष

भीमराव आंबेडकर प्रतिभाशाली एवं जुंझारू लेखक थे। आंबेडकर को पढने में बहोत रूची थी तथा वे लेखन में भी रूची रखते थे। इसके चलते उन्होंने मुंबई के अपने घर राजगृह में ही एक समृद्ध ग्रंथालय का निर्माण किया था, जिसमें उनकी 50 हजार से भी

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

अधिक किताबें थी। अपने लेखन द्वारा उन्होंने दलितों व देश की समस्याओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने लिखे हुए महत्वपूर्ण ग्रंथो में, अनहिलेशन ऑफ कास्ट, द बुद्ध एंड हिज धम्म, कास्ट इन इंडिया, हू वेअर द शूद्राज?, रिडल्स इन हिंदुइज़्म आदि शामिल हैं। 32 किताबें और मोनोग्राफ (22 पुर्ण तथा 10 अधुरी किताबें), 10 ज्ञापन, साक्ष्य और वक्तव्य, 10 अनुसंधान दस्तावेज, लेखों और पुस्तकों की समीक्षा एवं 10 प्रस्तावना और भविष्यवाणियां इतनी सारी उनकी अंग्रेजी भाषा की रचनाएँ हैं।[145] उन्हें ग्यारह भाषाओं का ज्ञान था, जिसमें मराठी (मातृभाषा), अंग्रेजी, हिन्दी, पालि, संस्कृत, गुजराती, जर्मन, फारसी, फ्रेंच, कन्नड और बंगाली ये भाषाएँ शामील है।[146] आंबेडकर ने अपने समकालिन सभी राजनेताओं की तुलना में सबसे अधिक लेखन किया हैं।[147] उन्होंने अधिकांश लेखन अंग्रेजी में किया हैं। सामाजिक संघर्ष में हमेशा सक्रिय और व्यस्त होने के साथ ही, उनके द्वारा रचित अनेकों किताबें, निबंध, लेख एवं भाषणों का बड़ा संग्रह है। वे असामान्य प्रतिभा के धनी थे। उनके साहित्यिक रचनाओं को उनके विशिष्ट सामाजिक दृष्टिकोण, और विद्वता के लिए जाना जाता है, जिनमें उनकी दूरदृष्टि और अपने समय के आगे की सोच की झलक मिलती है। आम्बेडकर के ग्रंथ भारत सहित पुरे विश्व में बहुत पढे जाते है। भगवान बुद्ध और उनका धम्म यह उनका ग्रंथ 'भारतीय बौद्धों का धर्मग्रंथ' है तथा बौद्ध देशों में महत्वपुर्ण है।[148] उनके डि.एस.सी. प्रबंध द प्रॉब्लम ऑफ द रूपी : इट्स ओरिजिन अ‍ॅन्ड इट्स सोल्युशन से भारत के केन्द्रिय बैंक यानी भारतीय रिज़र्व बैंक की स्थापना हुई है।[149][150][151]

महाराष्ट्र सरकार के शिक्षा विभाग ने बाबासाहेब आंबेडकर के सम्पूर्ण साहित्य को कई खण्डों में प्रकाशित करने की योजना बनायी है और उसके लिए 15 मार्च 1976 को डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मटेरियल पब्लिकेशन कमिटी कि स्थापना की। इसके अन्तर्गत 2019 तक 'डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर: राइटिंग्स एंड स्पीचेज' नाम से 22 खण्ड अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित किये जा चुके हैं, और इनकी पृष्ठ संख्या 15 हजार से भी अधिक हैं। इस योजना के पहले खण्ड का प्रकाशन आंबेडकर के जन्म दिवस 14 अप्रैल 1979 को हुआ। इन 22 वोल्युम्स में वोल्युम 14 दो भागों में, वोल्युम 17 तीन भागों में, वोल्युम 18 तीन भागों में व संदर्भ ग्रंथ 2 हैं, यानी कुल 29 किताबे प्रकाशित हैं।[152] 1987 से उनका मराठी अनुवाद करने का काम ने सुरू किया गया है, किंतु ये अभी तक पूरा नहीं हुआ। ‘डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर: राइटिंग्स एंड स्पीचेस’ के खण्डों के महत्व एवं लोकप्रियता को देखते हुए भारत सरकार के ‘सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय’ के डॉ. आंबेडकर प्रतिष्ठान ने इस खण्डों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने की योजना बनायी और इस योजना के अन्तर्गत अभी तक "बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर: संपूर्ण वाङ्मय" नाम से 21 खण्ड हिन्दी भाषा में प्रकाशित किये जा चुके हैं। यह 21 हिन्दी खंड महज 10 अंग्रेजी खंडो का अनुवाद हैं। इन हिन्दी खण्डों के कई संस्करण प्रकाशित किये जा चुके हैं। आंबेडकर का संपूर्ण लेखन साहित्य महाराष्ट्र सरकार के पास हैं, जिसमें से उनका आधे से अधिक साहित्य अप्रकाशित है। उनका पूरा साहित्य अभीतक प्रकाशित नहीं किया गया हैं, उनके अप्रकाशित साहित्य से 45 से अधिक खंड बन सकते हैं।[153][154]

संदर्भ

1. "डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का जीवन परिचय (Dr. BhimRav Ambedkar and the constitution of india b r ambedkar Biography in hindi) | Covid 19 and currently news of trending topics". डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का जीवन परिचय (Dr. BhimRav Ambedkar and the constitution of india b r ambedkar Biography in hindi) | Covid 19 and currently news of trending topics. अभिगमन तिथि 2022-10-03.
2. ↑ "BR Ambedkar's anniversary: His quotes on gender, politics and untouchability". 6 दिस 2017. मूल से 23 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
3. ↑ "Rescuing Ambedkar from pure Dalitism: He would've been India's best Prime Minister". Firstpost. मूल से 25 अप्रैल 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
4. ↑ "Do we really respect Dr Ambedkar or is it mere lip service?". DNA India. 6 दिस° 2014. मूल से 17 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
5. ↑ "Ambedkar in Modi's quiver, says Gandhis insulted father of Indian Constitution". Deccan Chronicle. 15 अप्रैल 2014. मूल से 16 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
6. ↑ "Home for Ambedkar 'house' - Maharashtra to buy UK bungalow where Dalit icon lived". www.telegraphindia.com. मूल से 5 नवंबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
7. ↑ Desk, FPJ Web (11 अप्रैल 2016). "Milestones achieved by Dr. Babasaheb Ambedkar". मूल से 6 अक्तूबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
8. ↑ "Archives released by LSE reveal BR Ambedkar's time as a scholar". https://www.hindustantimes.com/. 9 फ़र° 2016. मूल से 23 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद); |website= में बाहरी कड़ी (मदद)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

9. ↑ "Zee जानकारी : किसने रची थी डॉ. आंबेडकर के बारे में भ्रम फैलाने की साजिश". Zee News Hindi. 15 अप्रैल 2016. मूल से 8 जनवरी 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
10. ↑ http://ccis.nic.in/WriteReadData/CircularPortal/D2/D02est/12_6_2015_JCA-2-19032015.pdf Archived 2015-04-05 at the Wayback Machine Ambedkar Jayanti from ccis.nic.in on 19th March 2015
11. ↑ Ghildiyal, Subodh (29 मई 2018). "Bhimrao Ambedkar cult spreading across world". मूल से 20 जुलाई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 जुलाई 2019 – वाया The Economic Times.
12. ↑ "Bhim: Cult of Bhim spreading across world | India News - Times of India". The Times of India. मूल से 3 अगस्त 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 जुलाई 2019.
13. ↑ Jaffrelot, Christophe (2005). Dr. Ambedkar and Untouchability: Fighting the Indian Caste System. New York: Columbia University Press. पृ° 2. आईऍसबीऍन° 0-231-13602-1.
14. ↑ Pritchett, Frances. "In the 1890s" (PHP). मूल से 7 सितंबर 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 अगस्त 2006.
15. ↑ Menon, Dilip M. "What's in a name?: Those who invoke Ambedkar are complicit in a forgetting, much like Gandhi". Scroll.in. मूल से 13 अगस्त 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
16. ↑ "Mahar". Encyclopædia Britannica. britannica.com. मूल से 30 नवम्बर 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 12 जनवरी 2012.
17. ↑ Ahuja, M. L. (2007). "Babasaheb Ambedkar". Eminent Indians : administrators and political thinkers. New Delhi: Rupa. पपृ° 1922–1923. आईऍसबीऍन° 8129111071. मूल से 23 दिसंबर 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 जुलाई 2013.
18. ↑ "आंबेडकर गुरुजींचं कुटुंब जपतंय सामाजिक वसा, कुटुंबानं सांभाळल्या 'त्या' आठवणी". divyamarathi. 26 दिस° 2016. मूल से 28 मई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
19. ↑ Pritchett, Frances. "In the 1900s" (PHP). मूल से 6 जनवरी 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 जनवरी 2012.
20. ↑ Pritchett, Frances. "In the 1900s" (PHP). मूल से 6 जनवरी 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 अगस्त 2006.
21. ↑ "आधुनिक शिक्षा के हिमायती डॉ. भीमराव आम्बेडकर". Prabhat Khabar - Hindi News. अभिगमन तिथि 2020-12-06.
22. ↑ Pritchett, Frances. "In the 1910s" (PHP). मूल से 23 नवम्बर 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 जनवरी 2012.
23. ↑ "Bhimrao Ambedkar". columbia.edu. मूल से 10 फ़रवरी 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 अक्टूबर 2009.
24. ↑ "txt_zelliot1991". www.columbia.edu. मूल से 3 नवंबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
25. ↑ Ambedkar, B. R. (25 अप्रैल 1921). "Provincial Decentralization of Imperial Finance in British India". University of London. मूल से 19 अक्तूबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019 – वाया Google Books.
26. ↑ "London School of Economics releases BR Ambedkar archives". DNA India. 9 फ़र° 2016. मूल से 19 अक्तूबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
27. ↑ Kshīrasāgara, Rāmacandra (1 January 1994). "Dalit Movement in India and Its Leaders, 1857-1956". M.D. Publications Pvt. Ltd. मूल से 31 जुलाई 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 November 2016 – वाया Google Books.
28. ↑ संवाददाता, सौतिक बिस्वास बीबीसी. "'दलित मुसलमानों के घर न जाते हैं, न खाते हैं'". BBC News हिंदी. मूल से 18 सितंबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
29. ↑ Ambedkar, Dr. B.R. "Waiting for a Visa". columbia.edu. Columbia University. मूल से 24 जून 2010 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 एप्रिल 2015.
30. ↑ Keer, Dhananjay (1971) [1954]. Dr. Ambedkar: Life and Mission. Mumbai: Popular Prakashan. पपृ° 37–38. OCLC 123913369. आईऍसबीऍन° 8171542379.
31. ↑ Harris, Ian (संपा°). Buddhism and politics in twentieth-century Asia. Continuum International Group.

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

32. ↑ Tejani, Shabnum (2008). "From Untouchable to Hindu Gandhi, Ambedkar and Depressed class question 1932". Indian secularism : a social and intellectual history, 1890-1950. Bloomington, Ind.: Indiana University Press. पपृ° 205–210. आई°ऍस°बी°ऍन° 0253220440. अभिगमन तिथि 17 July 2013.
33. ↑ Jaffrelot, Christophe (2005). Dr Ambedkar and Untouchability: Analysing and Fighting Caste. London: C. Hurst & Co. Publishers. पृ° 4. आई°ऍस°बी°ऍन° 1850654492.
34. ↑ "Dr. Ambedkar". National Campaign on Dalit Human Rights. मूल से 8 अक्टूबर 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 12 जनवरी 2012.
35. ↑ Benjamin, Joseph (जून 2009). "B. R. Ambedkar: An Indefatigable Defender of Human Rights". Focus. Japan: Asia-Pacific Human Rights Information Center (HURIGHTS OSAKA). 56.
36. ↑ Thorat, Sukhadeo; Kumar, Narender (2008). B. R. Ambedkar:perspectives on social exclusion and inclusive policies. New Delhi: Oxford University Press.
37. ↑ Ambedkar, B. R. (1979). Writings and Speeches. 1. Education Dept., Govt. of Maharashtra.
38. ↑ वागले, निखिल (8 जन° 2018). "आम्बेडकर ने कोरेगांव को दलित स्वाभिमान का प्रतीक बनाया?". मूल से 19 जुलाई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019 – वाया www.bbc.com. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
39. ↑ "Dr. Babasaheb Ambedkar". Maharashtra Navanirman Sena. मूल से 10 मई 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 दिसंबर 2010.
40. ↑ "मनुस्मृति-ब्रिटैनिका विश्वकोश". www.britannica.com. ब्रिटैनिका विश्वकोश. मूल से 12 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २३ जून २०१८.
41. ↑ लिए, एम राजीव लोचन बीबीसी हिंदी डॉट कॉम के. "भारत में कैसे बढ़ा 'मनुस्मृति' का महत्व". BBC News हिंदी. मूल से 25 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
42. ↑ विचारक, चंद्रभान प्रसाद दलित. "'क्या मनुस्मृति दहन दिन मनाएगा संघ?'". BBC News हिंदी. मूल से 28 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
43. ↑ Kumar, Aishwary. "The Lies Of Manu". outlookindia.com. मूल से 18 अक्टूबर 2015 को पुरालेखित.
44. ↑ "Annihilating caste". frontline.in. मूल से 28 मई 2014 को पुरालेखित.
45. ↑ Menon, Nivedita (25 December 2014). "Meanwhile, for Dalits and Ambedkarites in India, December 25th is Manusmriti Dahan Din, the day on which B R Ambedkar publicly and ceremoniously in 1927". Kafila. मूल से 24 सितंबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 21 October 2015.
46. ↑ "11. Manusmriti Dahan Day celebrated as Indian Women's Liberation Day" (PDF). मूल से 17 नवम्बर 2015 को पुरालेखित (PDF).
47. ↑ Keer, Dhananjay (1990). Dr. Ambedkar : life and mission (3rd संस्करण). Bombay: Popular Prakashan Private Limited. पपृ° 136–140. आई°ऍस°बी°ऍन° 8171542379.
48. ↑ Kothari, R. (2004). Caste in Indian Politics. Orient Blackswan. पृ° 46. ISBN 81-250-0637-0, ISBN 978-81-250-0637-4.
49. ↑ Pritchett. "Rajah, Rao Bahadur M. C." University of Columbia. मूल से 30 जून 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 जनवरी 2009.
50. ↑ DelhiSeptember 24, India Today Web Desk New; September 24, 2016UPDATED:; Ist, 2016 13:15. "Poona Pact: Mahatma Gandhi's fight against untouchability". India Today. मूल से 9 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
51. ↑ "पुणे कराराचा बाबासाहेबांनीच केला होता धिक्कार". Lokmat. 25 सित° 2015. मूल से 12 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
52. ↑ Khairmode, Changdev Bhawanrao (1985). Dr. Bhimrao Ramji Ambedkar (Vol. 7) (Marathi में). Mumbai: Maharashtra Rajya Sahilya Sanskruti Mandal, Matralaya. पृ° 273.
53. ↑ "13A. Dr. Ambedkar in the Bombay Legislature PART I". मूल से 2 मार्च 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 21 सितंबर 2019.
54. ↑ Kumar, Raj (9 August 2008). "Ambedkar and His Writings: A Look for the New Generation". Gyan Publishing House – वाया Google Books.

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

55. ↑ http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00ambedkar/timeline/1920s.html Archived 2018-12-17 at the Wayback Machine>
56. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 30 मई 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 जुलाई 2018.
57. ↑ Pritchett, Frances. "In the 1930s" (PHP). मूल से 6 सितंबर 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 अगस्त 2006.
58. ↑ Jaffrelot, Christophe (2005). Dr Ambedkar and Untouchability: Analysing and Fighting Caste. London: C. Hurst & Co. Publishers. पपृ° 76–77. आई°ऍस°बी°ऍन° 1850654492.
59. ↑ Khairmode, Changdev Bhawanrao (1985). Dr. Bhimrao Ramji Ambedkar (Vol. 7) (Marathi में). Mumbai: Maharashtra Rajya Sahilya Sanskruti Mandal, Matralaya. पृ° 245.
60. ↑ Jaffrelot, Christophe (2005). Dr Ambedkar and Untouchability: Analysing and Fighting Caste. London: C. Hurst & Co. Publishers. पपृ° 76–77. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-1850654490.
61. ↑ "May 15: It was 79 years ago today that Ambedkar's 'Annihilation Of Caste' was published". मूल से 29 मई 2016 को पुरालेखित.
62. ↑ Mungekar, Bhalchandra (16–29 जुलाई 2011). "Annihilating caste". Frontline. 28 (11). मूल से 1 नवम्बर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 जुलाई 2013.
63. ↑ Deb, Siddhartha, "Arundhati Roy, the Not-So-Reluctant Renegade" Archived 6 जुलाई 2017 at the Wayback Machine, New York Times Magazine, 5 March 2014. Retrieved 5 March 2014.
64. ↑ कोठारी, उर्विश (7 दिस. 2018). "गाँधी को क्या वाक़ई ग़लत आंकते थे आंबेडकर?". मूल से 14 मई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 14 मई 2019 – वाया www.bbc.com. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
65. ↑ "A for Ambedkar: As Gujarat's freedom march nears tryst, an assertive Dalit culture spreads". मूल से 16 सितम्बर 2016 को पुरालेखित.
66. ↑ Sadangi, Himansu Charan (13 August 2008). "Emancipation of Dalits and Freedom Struggle". Gyan Publishing House – वाया Google Books.
67. ↑ Keer, Dhananjay (13 August 1971). "Dr. Ambedkar: Life and Mission". Popular Prakashan – वाया Google Books.
68. ↑ Jaffrelot, Christophe (2005). Dr Ambedkar and Untouchability: Analysing and Fighting Caste. London: C. Hurst & Co. Publishers. पृ° 5. आई°ऍस°बी°ऍन° 1850654492.
69. ↑ "इतिहास के पन्नों से : भारत में दलाई लामा, आंबेडकर को भारत रत्न". BBC News हिंदी. मूल से 8 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
70. ↑ Sialkoti, Zulfiqar Ali (2014), "An Analytical Study of the Punjab Boundary Line Issue during the Last Two Decades of the British Raj until the Declaration of 3 June 1947" (PDF), Pakistan Journal of History and Culture, XXXV (2): 73–76, मूल (PDF) से 2 एप्रिल 2018 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 3 अगस्त 2018
71. ↑ Dhulipala, Venkat (2015), Creating a New Medina, Cambridge University Press, पपृ° 124, , 134, , 142–144, , 149, आई°ऍस°बी°ऍन° 978-1-107-05212-3
72. ↑ Pritchett, Frances. "In the 1940s" (PHP). मूल से 23 जून 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 अगस्त 2006.
73. ↑ "Attention BJP: When the Muslim League rescued Ambedkar from the 'dustbin of history'". Firstpost. 15 एप्रिल 2015. मूल से 20 सितम्बर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 सितम्बर 2015.
74. ↑ "Alphabetical List Of Former Members Of Rajya Sabha Since 1952". Rajya Sabha Secretariat, New Delhi. मूल से 14 फ़रवरी 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 March 2019.
75. ↑ Khobragade, Fulchand (2014). Suryaputra Yashwantrao Ambedkar (Marathi में). Nagpur: Sanket Prakashan. पपृ° 20, 21.
76. ↑ "'प्राचीन काल में हिन्दू गोमांस खाते थे'". BBC News हिंदी. मूल से 28 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
77. ↑ Ambedkar, Bhimrao Ramji (1946). "Chapter X: Social Stagnation". Pakistan or the Partition of India. Bombay: Thackers Publishers. पपृ° 215–219. मूल से 12 सितम्बर 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 8 अक्टूबर 2009.
78. ↑ साहा, अभिमन्यु कुमार (6 दिस. 2017). "मुसलमान क्यों नहीं बने थे आंबेडकर?". मूल से 2 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019 – वाया www.bbc.com. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

79. ↑ "डॉ. आंबेडकर ने हिंदू धर्म क्यों छोड़ा?". Navbharat Times Reader's Blog. 26 जून 2015. मूल से 2 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
80. ↑ "हिंदू धर्म छोड़कर क्यों बौद्ध धर्म के हुए आंबेडकर?". www.navodayatimes.in. 14 अक्तू. 2017. मूल से 2 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
81. ↑ "बाबासाहेब और महात्मा : एक लंबे अरसे तक गाँधी को पता ही नहीं था कि अंबेडकर खुद 'अछूत' हैं!". Satyagrah. मूल से 15 जुलाई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 जुलाई 2019.
82. ↑ "इसलिए बाबासाहेब आंबेडकर ने लाखों दलितों के साथ अपनाया था बौद्ध धर्म!". https://m.aajtak.in. मूल से 2 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. |website= में बाहरी कड़ी (मदद)
83. ↑ "Some Facts of Constituent Assembly". Parliament of India. National Informatics Centre. मूल से 11 May 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 14 April 2011. On 29 August 1947, the Constituent Assembly set up an Drafting Committee under the Chairmanship of B. R. Ambedkar to prepare a Draft Constitution for India
84. ↑ Laxmikanth, M. "INDIAN POLITY". McGraw-Hill Education. मूल से 31 मार्च 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 April 2019 – वाया Google Books.
85. ↑ DelhiNovember 26, India Today Web Desk New; November 26, 2018UPDATED:; Ist, 2018 15:31. "Constitution Day: A look at Dr BR Ambedkar's contribution towards Indian Constitution". India Today. मूल से 31 मार्च 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 April 2019.
86. ↑ "Denying Ambedkar his due". 14 June 2016. मूल से 31 मार्च 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 April 2019.
87. ↑ "Constituent Assembly of India Debates". 164.100.47.194. मूल से 7 जनवरी 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 April 2019.
88. ↑ Austin, Granville (1999), The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation, Oxford University Press
89. ↑ "Constituent Assembly Debates Clause wise Discussion on the Draft Constitution 15th November 1948 to 8th January 1949". मूल से 24 मई 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 12 जनवरी 2012.
90. ↑ Sheth, D. L. (नवम्बर 1987). "Reservations Policy Revisited". Economic and Political Weekly. 22: 1957–1962. JSTOR 4377730.
91. ↑ "Constitution of India". Ministry of Law and Justice of India. मूल से 22 अक्टूबर 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 10 अक्टूबर 2013.
92. ↑ amanadas, Dr. K. "Kashmir Problem From Ambedkarite Perspective". ambedkar.org. मूल से 4 अक्टूबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 सितम्बर 2013.
93. ↑ Sehgal, Narender (1994). "Chapter 26: Article 370". Converted Kashmir: Memorial of Mistakes. Delhi: Utpal Publications. मूल से 5 सितम्बर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 सितम्बर 2013.
94. ↑ Tilak. "Why Ambedkar refused to draft Article 370". Indymedia India. मूल से 7 February 2004 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 September 2013.
95. ↑ "Ambedkar with UCC". Outlook India. मूल से 14 अप्रैल 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 14 August 2013.
96. ↑ "One nation one code: How Ambedkar and others pushed for a uniform code before Partition | India News - Times of India". The Times of India. मूल से 4 फ़रवरी 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
97. ↑ "Ambedkar And The Uniform Civil Code". मूल से 14 एप्रिल 2016 को पुरालेखित.
98. ↑ "Ambedkar favoured common civil code". मूल से 28 नवम्बर 2016 को पुरालेखित.
99. ↑ Chandrababu, B. S; Thilagavathi, L (2009). Woman, Her History and Her Struggle for Emancipation. Chennai: Bharathi Puthakalayam. पपृ° 297–298. आईऍसबीऍन 8189909975.
100. ↑ Dalmia, Vasudha; Sadana, Rashmi, संपा° (2012). "The Politics of Caste Identity". The Cambridge Companion to Modern Indian Culture. Cambridge Companions to Culture (illustrated संस्करण). Cambridge University Press. पृ° 93. आईऍसबीऍन 0521516250.
101. ↑ Guha, Ramachandra (2008). India After Gandhi: The History of the World's Largest Democracy. पृ° 156. आईऍसबीऍन 978-0-06-095858-9.

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

102. ↑ "Statistical Report On General Elections, 1951 to The First Lok Sabha: List of Successful Candidates" (PDF). Election Commission of India. पपृ° 83, 12. मूल (PDF) से 8 October 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 June 2014.
103. ↑ Sabha, Rajya. "Alphabetical List of All Members of Rajya Sabha Since 1952". Rajya Sabha Secretariat. मूल से 9 जनवरी 2010 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 22 जुलाई 2018. Serial Number 69 in the list
104. ↑ IEA. "Dr. B.R. Ambedkar's Economic and Social Thoughts and Their Contemporary Relevance". IEA Newsletter – The Indian Economic Association(IEA) (PDF). India: IEA publications. पृ° 10. मूल (PDF) से 16 अक्टूबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 एप्रिल 2018.
105. ↑ Mishra, edited by S.N. (2010). Socio-economic and political vision of Dr. B.R. Ambedkar. New Delhi: Concept Publishing Company. पपृ° 173–174. आई°ऍस°बी°ऍन° 818069674X. मूल से 23 दिसंबर 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 अप्रैल 2018.
106. ↑ TNN (15 अक्टूबर 2013). "'Ambedkar had a vision for food self-sufficiency'". The Times of India. मूल से 17 अक्टूबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 अक्टूबर 2013.
107. ↑ Zelliot, Eleanor (1991). "Dr. Ambedkar and America". A talk at the Columbia University Ambedkar Centenary. मूल से 3 नवम्बर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 अक्टूबर 2013.
108. ↑ (PDF) http://www.aygrt.net/publishArticles/651.pdf. अभिगमन तिथि 28 November 2012. गायब अथवा खाली |title= (मदद)[मृत कड़ियाँ]
109. ↑ "Archived copy" (PDF). मूल (PDF) से 2 नवम्बर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 नवम्बर 2012.
110. ↑ "Archived copy" (PDF). मूल (PDF) से 28 फ़रवरी 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 नवम्बर 2012.
111. ↑ "Round Table India — The Problem of the Rupee: Its Origin and Its Solution (History of Indian Currency & Banking)". Round Table India. मूल से 1 नवम्बर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 एप्रिल 2018.
112. ↑ "Ambedkar Lecture Series to Explore Influences on Indian Society". columbia.edu. मूल से 21 दिसंबर 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 एप्रिल 2018.
113. ↑ Keer, Dhananjay (2005) [1954]. Dr. Ambedkar: life and mission. Mumbai: Popular Prakashan. पपृ° 403–404. आई°ऍस°बी°ऍन° 81-7154-237-9. मूल से 31 जुलाई 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 June 2012.
114. ↑ Pritchett, Frances. "In the 1940s". मूल से 23 जून 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 जून 2012.
115. ↑ "Archived copy". मूल से 10 दिसंबर 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 जून 2017.
116. ↑ Sangharakshita (2006). "Milestone on the Road to conversion". Ambedkar and Buddhism (1st South Asian संस्करण). New Delhi: Motilal Banarsidass Publishers. पृ° 72. आई°ऍस°बी°ऍन° 8120830237. मूल से 31 जुलाई 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 17 July 2013.
117. ↑ Pritchett, Frances. "In the 1950s" (PHP). मूल से 20 जून 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 अगस्त 2006.
118. ↑ Ganguly, Debjani; Docker, John, संपा° (2007). Rethinking Gandhi and Nonviolent Relationality: Global Perspectives. Routledge studies in the modern history of Asia. 46. London: Routledge. पृ° 257. OCLC 123912708. आई°ऍस°बी°ऍन° 0415437407.
119. ↑ Quack, Johannes (2011). Disenchanting India: Organized Rationalism and Criticism of Religion in India. Oxford University Press. पृ° 88. OCLC 704120510. आई°ऍस°बी°ऍन° 0199812608.
120. ↑ "The Buddha and His Dhamma, by Dr. B. R. Ambedkar". www.columbia.edu. मूल से 27 नवंबर 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
121. ↑ प्रभाकर वैद्य. डॉ. आंबेडकर आणि त्यांचा धम्म. पृ° 99.
122. ↑ "Ambedkar Death Anniversary 2020 पर जानिए महापरिनिर्वाण दिवस के बारे में". S A NEWS (अंग्रेज़ी में). 2020-12-06. अभिगमन तिथि 2020-12-06.
123. ↑ "संग्रहीत प्रति". मूल से 28 जुलाई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 28 जुलाई 2018.
124. ↑ Sinha, Arunav. "Monk who witnessed Ambedkar's conversion to Buddhism". मूल से 17 एप्रिल 2015 को पुरालेखित.

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

125. ↑ रावत, Vidya Bhushan Rawat विद्याभूषण (1 जून 2014). "आंबेडकर से जुड़ें नेपाल के दलित : गहतराज". फॉरवर्ड प्रेस. मूल से 9 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
126. ↑ Buddha or Karl Marx – Editorial Note in the source publication: Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches, Vol. 3 Archived 19 मार्च 2012 at the Wayback Machine. Ambedkar.org. Retrieved on 12 August 2012.
127. ↑ "Life of Babasaheb Ambedkar". मूल से 25 मई 2013 को पुरालेखित.
128. ↑ Sangharakshita (2006) [1986]. "After Ambedkar". Ambedkar and Buddhism (First South Asian संस्करण). New Delhi: Motilal Banarsidass Publishers Pvt. Ltd. पपृ॰ 162–163. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 81-208-3023-7.
129. ↑ Kantowsky, Detlef (2003). Buddhists in India today:descriptions, pictures, and documents. Manohar Publishers & Distributors.
130. ↑ Smith, edited by Bardwell L. (1976). Religion and social conflict in South Asia. Leiden: Brill. पृ॰ 16. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 9004045104. मूल से 1 जनवरी 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 जून 2018.
131. ↑ "President, PM condole Savita Ambedkar's death". The Hindu. 30 मई 2003. मूल से 19 जनवरी 2012 को पुरालेखित.
132. ↑ "The Hindu : President, PM condole Savita Ambedkar's death". www.thehindu.com. मूल से 17 अक्तूबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
133. ↑ "Biographical Sketch, Member of Parliament, 13th Lok Sabha". parliamentofindia.nic.in. मूल से 20 मई 2011 को पुरालेखित.
134. ↑ "Baba Saheb". मूल से 5 मई 2006 को पुरालेखित.
135. ↑ "Homage to Dr Ambedkar: When all roads led to Chaityabhoomi". मूल से 24 मार्च 2012 को पुरालेखित.
136. ↑ Ganguly, Debanji (2005). "Buddha, bhakti and 'superstition': a post-secular reading of dalit conversion". Caste, Colonialism and Counter-Modernity: : notes on a postcolonial hermeneutics of caste. Oxon: Routledge. पृ॰ 172. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 0-415-34294-5. |pages= और |page= के एक से अधिक मान दिए गए हैं (मदद)
137. ↑ "जाने कैसे बाबा साहेब ने बुद्ध के तीन सूत्रों को लोकप्रिय नारों में बदल दिया– News18 हिंदी". News18 India. 6 दिस॰ 2017. मूल से 16 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
138. ↑ "दलित विमर्शः फुले-आंबेडकर की विरासत". Jansatta. 1 मई 2016. मूल से 13 अप्रैल 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
139. ↑ "मेरा जीवन तीन गुरुओं और तीन उपास्यों से बना है- बाबासाहब डॉ. बी. आर. आंबेडकर". मूल से 13 अप्रैल 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
140. ↑ "Jyotiba Phule". sainimali.com. मूल से 24 सितंबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
141. ↑ Tripathi, Arun Kumar. "The BJP Has Swept UP But It Does Not Know the Way Ahead From Here". thewire.in (अंग्रेज़ी में). मूल से 20 अक्तूबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 31 मार्च 2017.
142. ↑ "KCR's 125-feet Ambedkar statue is a mockery of the very spirit of Ambedkarism". The News Minute. 15 अप्रैल 2016. मूल से 13 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 31 मार्च 2017.
143. ↑ "Kabali is boring, but its socio-political depths make it a blockbuster that wasn't". The News Minute. 23 जुलाई 2016. मूल से 13 दिसंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 31 मार्च 2017.
144. ↑ "The rise of Ambedkarism". www.merinews.com. मूल से 4 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 4 अगस्त 2018.
145. ↑ जाधव, डॉ. नरेंद्र (24 अक्तुबर 2012). प्रज्ञा महामानवाची (खंड २) (मराठी में). ग्रंथाली. पपृ॰ 344–350. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 9789380092300. |year= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
146. ↑ आंबेडकर, डॉ. बाबासाहेब (2012). माझी आत्मकथा (मराठी में).
147. ↑ जाधव, डॉ. नरेंद्र (24 अक्तुबर 2012). बोल महामानवाचे (मराठी में). ग्रंथाली. पृ॰ 5. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 9789380092300. |year= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580|

| Volume 9, Issue 11, November 2022 |

| DOI: 10.15680/IJMRSETM.2022.0911014 |

148. ↑ Christopher Queen (2015). Steven M. Emmanuel (संपा°). A Companion to Buddhist Philosophy. John Wiley & Sons. पपृ° 529–531. आईऍसबीऍन° 978-1-119-14466-3. मूल से 23 मार्च 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 जून 2018.
149. ↑ "11 Facts You Never Knew About The Reserve Bank Of India (RBI)". 15 जन° 2015. मूल से 13 अगस्त 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
150. ↑ "Dr Ambedkar's Role in the Formation of Reserve Bank of India | Dr. B. R. Ambedkar's Caravan". मूल से 24 मई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 अप्रैल 2019.
151. ↑ "संग्रहीत प्रति" (PDF). मूल से 10 मई 2012 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 24 जून 2018.
152. ↑ "Books & Writings of Ambedkar | Dr. B. R. Ambedkar". www.mea.gov.in. मूल से 8 मई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 8 मई 2019.
153. ↑ Ambedkar, Dr. Babasaheb (1979). Dr. Babasaheb Ambedkar: Writing and Speeches (English में). Mumbai: Education department, the government of Maharashtra. पपृ° 15, 000+. आईऍसबीऍन° 9789351090649.
154. ↑ "Dr Ambedkar's rare works pushed into a cubbyhole for construction of Metro station". DNA India. 3 मई 2017. मूल से 5 मई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 5 मई 2019.

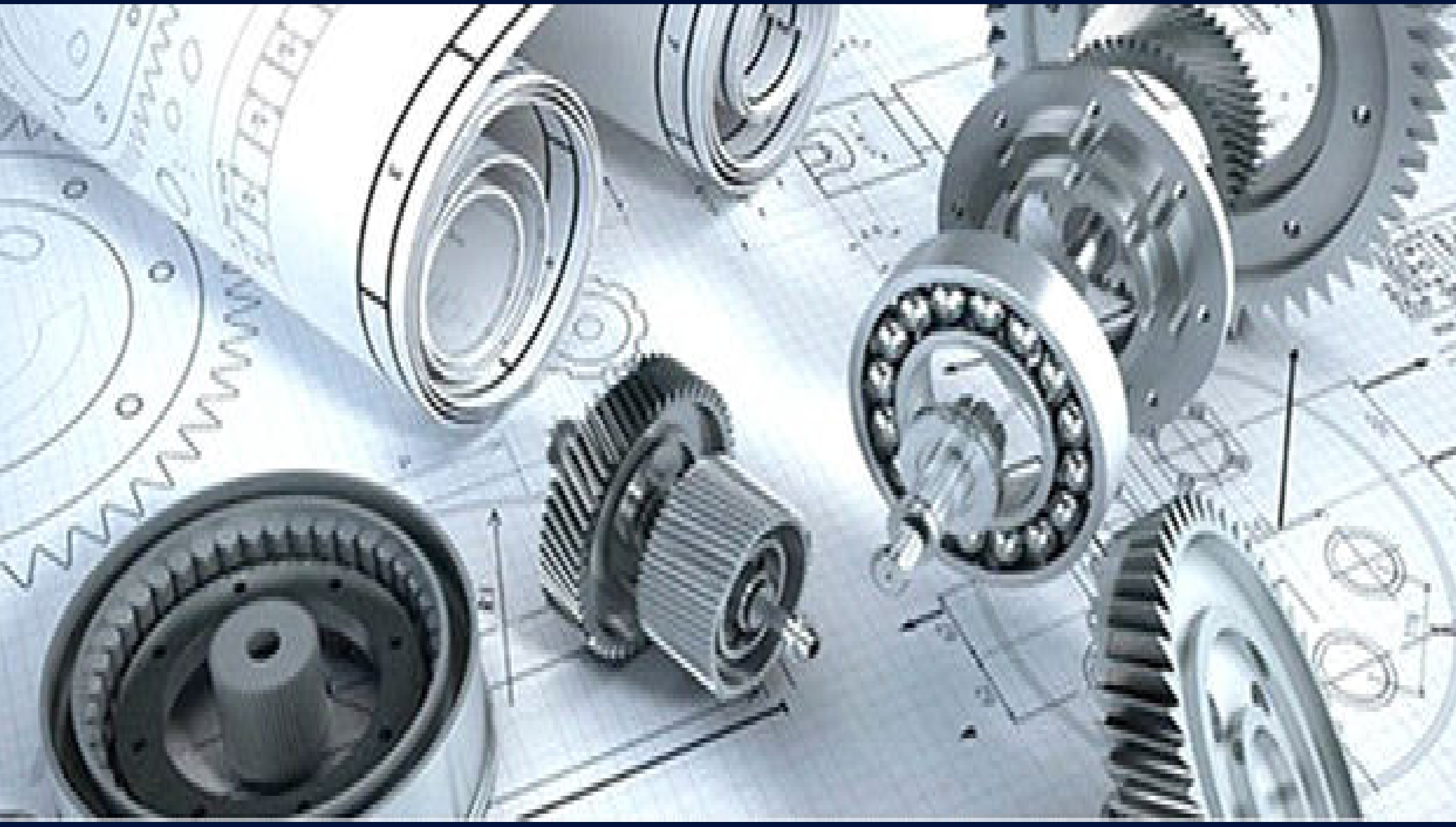

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 7.580

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com